ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

भाद्रपद २०८३ सितम्बर २०२६

₹ ३०

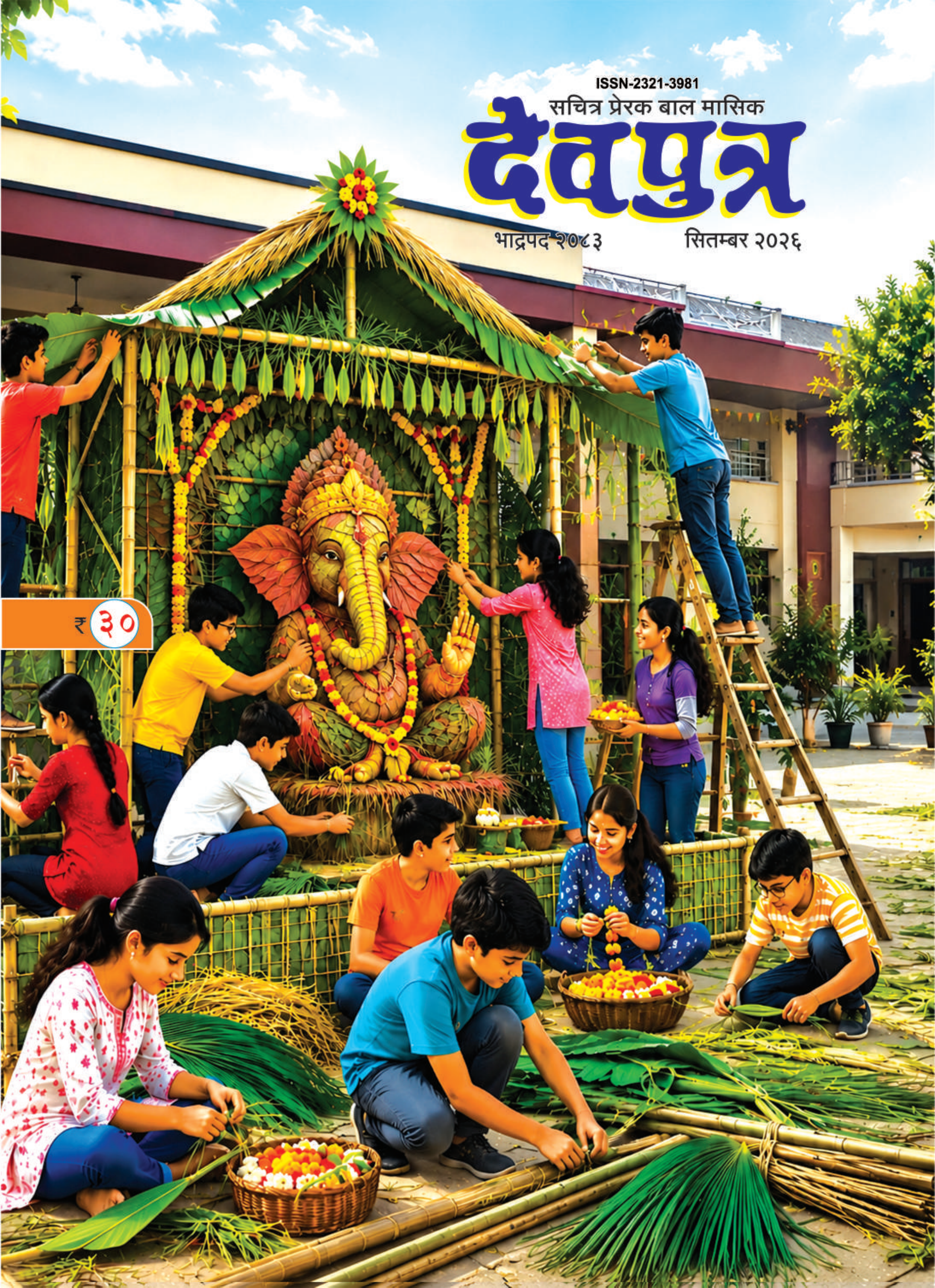

कविता

सोच रहा हूँ

– रमेशचंद्र पंत

छोटा हूँ पर सोच रहा हूँ,
काम करूँ कुछ बड़े–बड़े।
बाबा भी ऑफिस से आते,
अक्सर ही हैं खूब देर से,
और काम भी ले आते हैं
घर करने को खूब ढेर से।
नहीं चलेगा यह सब बोलूँ,
लूँ निर्णय मैं कड़े–कड़े।
अम्मा भी है लिए हाथ में
अक्सर ही मोबाइल दिखतीं,

हुई रोशनी आँखों की कम
दर्द हुआ कंधों में कहतीं।
कह दूँ उनसे नहीं देखिए,
इसको ज्यादा पड़े–पड़े।
ध्यान नहीं देता हूँ मैं भी
सच बोलूँ पढ़ने–लिखने में,
मजा खूब आता बस मुझको
टीवी से चिपके रहने में।
भला चलेगा यह भी कैसे,
सोच रहा हूँ खड़े–खड़े।

–अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

भाद्रपद	२०८३	वर्ष	४७
सितम्बर	२०२६	अंक	०३

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	३० रुपये
वार्षिक	३०० रुपये
दस वर्षीय	५००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:

व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com

संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

प्रतिवर्ष १४ सितंबर को नए भारत का एक महत्वपूर्ण भाषा-पर्व 'हिन्दी दिवस' आता है। इसी दिन वर्ष १९४९ को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी स्वतंत्र भारत की आधिकारिक राजभाषा बनी थी।

भाषा हमारे व्यवहार को ही नहीं बल्कि संस्कृति और संस्कार का भी परिचय देती है। इसलिए **'अच्छी भाषा और अपनी भाषा' एक आजीवन मनाया जाने योग्य दैनिक पर्व है।**

बच्चो! क्या हम अपनी इस भाषा माँ की सेवा का एक छोटासा नित्यनियम ले सकते हैं? करना केवल इतना है कि प्रतिदिन अपने लिखे या बोले वाक्यों में से पाँच ऐसे शब्द खोजकर लिखना है जो हिन्दी बोलते समय भी हिन्दी के न थे। अब सोचना है कि क्या इनके कोई सरल हिन्दी शब्द हमें पता थे? सोचिए पता होते हुए भी क्या हमने केवल असावधान अभ्यास के कारण उनका प्रयोग नहीं किया? उदाहरण के लिए सोचिए न, 'स्कूल' कहना या लिखना सरल है या 'शाला', 'एरोप्लेन' कहना सरल है या 'हवाई जहाज' अथवा 'विमान'। ऐसे कई शब्द मिल जाएँगे। अब जिन बाहरी शब्दों के सरल हिन्दी शब्द स्वयं न पता हो, मित्रों से, बड़ों से पूछने में संकोच मत करो। क्योंकि ऐसा करने से आप उनका ध्यान भी इस ओर आकर्षित करने का एक अच्छा काम करोगे। सुधार स्वयं से आरंभ करो। वे न बता सकें, तब शब्दकोश हो तो बहुत अच्छा नहीं तो गूगल भी कर सकते हो। लेकिन सबसे पहले गूगल पर नहीं खोजना, पहले लोगों से पूछना। शब्दों के कठिन विकल्प टालना। नहीं तो 'ट्रेन' के स्थान पर 'रेलगाड़ी' को 'लौहपथगामिनीसहस्रचक्रवाहिनी' कहने लगे तो ऐसे प्रयोग व्यवहार में कठिन और हास्यास्पद तो लगेंगे ही आपका उत्साह भी ठंडा हो जाएगा।

देखना, भाषा माँ आपकी इस सेवा से प्रसन्न होकर आपका 'अपनी भाषा का शब्द भंडार' इतना भर देंगी कि आपकी वाणी सदैव आपका सच्चा आभूषण बनकर रहेगी। तो कर सकते हैं न प्रतिदिन कुछ पल निकालकर भाषा माँ की ऐसी **शब्दपूजा**? ऐसे हो जाएगा हमारा **'हर दिवस, हिन्दी दिवस।'**

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- साहसी तितली -चैतन्य ०५
- विश्वास -डॉ. शकुन्तला कालरा २०
- फलों का राजा -डॉ. सेवाराम नंदवाल २८
- बैल और गधा -तपेश भौमिक ४४

छोटी कहानी

- ईमानदारी का इनाम -मृदुल त्यागी ३६

लोककथा

- तीन खूंटे -विमला रस्तोगी १८

लघुकथा

- घमण्डी हाथी -मीरा जैन १३
- मान गए केशव बाबू -डॉ. अविन्द दुबे ३१
- आशा -राममूरत 'राही' ४०

एकांकी

- भीख नहीं सीख -समीर गांगुली ०९

आलेख

- शब्दों से खेलें और..... -शिखरचंद जैन २४
- विघ्न विनाशक श्रीगणेश -शिवचरण चौहान ३२

बाल लेखनी

- बारिश आई -आर्यन कुशवाह ३३
- आओ बच्चों गाएँ हम -लारा उपाध्याय ४७
- समय का महत्व -शिवप्रताप सिंह ठाकुर ४९

कविता

- सोच रहा हूँ -रमेशचंद्र पंत ०२
- हिन्दी है माता -राजा चौरसिया ४१
- हमारे शिक्षक -डॉ. कविता विकास ४१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १४
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ३४
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३८
- छः अँगुल मुस्कान - ४०
- पुस्तक परिचय - ४२

बौद्धिक क्रीडा

- बौद्धिक व्यायाम -देवांशु वत्स १९
- पहेलियाँ - ३७
- खोजो तो जानें -चाँद मोहम्मद घोसी ४७
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी ४९
- श्रीगणेश पहेलियाँ - ५०

चित्रकथा

- लाल बुझक्कड़ काका के..... -देवांशु वत्स ३९
- कमाल की तरकीब -देवांशु वत्स ४८

एवं
संकेत गोस्वामी की जानकारी व
मनोरंजन से भरी विशेष प्रस्तुतियाँ

क्यू आर कोड से भी जमा कर सकते हैं आप देवपुत्र का सदस्यता शुल्क

क्यू आर कोड से शुल्क जमा करने पर स्क्रीन शॉट, अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड सहित एवं मोबाइल नम्बर, प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान के व्हाट्सएप नंबर 8103700552 पर अवश्य प्रेषित करें।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** **चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

साहसी तितली

– चैतन्य

चंपक वन की सड़क के किनारे डमडम भालू का ढाबा था। ढ़ाबे के बाहर पानी का वाटर टैंक था। वाटर टैंक से रिसता पानी के पास बैठकर रैनी तितली प्रतिदिन प्यास मिटाती थी और फूलों के पौधे तलाशने चल देती थी।

एक दिन ढ़ाबे के पानी की टंकी के पास बैठकर रैनी प्यास मिटा रही थी। तभी एक ट्रक आकर ढाबे के पास रुका। ट्रक में रंग–बिरंगे और खुशबूदार फूलों के पौधे लदे थे। ट्रक में लदे फूलों की खुशबू से रैनी को लालच आ गया और वह ट्रक के अंदर जाकर खुशबूदार फूलों की खुशबू से रैनी को लालच आ गया और वह ट्रक के अंदर जाकर खुशबूदार फूलों का आनंद लेने में मग्न हो गयी।

तभी ट्रक ढाबे से छूटकर काफी दूर निकल गया। ट्रक जब चंपक वन से निकल कर काफी दूर जा चुका तो रैनी के होश आ गए। रैनी को दिशाओं का भी ज्ञान नहीं था। इसलिए उसको चंपक वन की ओर वापस जाने की हिम्मत नहीं हुई और वह ट्रक के रुकने की प्रतीक्षा करने लगी। लेकिन ट्रक शहर की एक बड़ी बिल्डिंग के पास रुका। ट्रक के रुकते ही रैनी ट्रक से उतर गयी। अँधेरा छाने लगा था। किन्तु पक्की, चौड़ी और साफ सुथरी सड़कों के किनारे जगमगाती रोशनी से अँधेरा होने का भ्रम मिट गया। जगमगाती रोशनी और खुशनुमा दृश्य से रैनी चंपक वन की याद भूल गयी।

बड़ी बिल्डिंग से सटकर बड़े मैदान में शामियाना का एक बड़ासा खेमा बना था। खेमा के चारों ओर चटकीले परदों का घेराव था। अंदर आवाजाही के लिए चार रास्ते थे। शामियाना की छत पर रंगबिरंगे झूलते बल्ब जगमगा रहे थे।

चुनाव में विजय प्राप्त करने की खुशी में जग्गू हाथी ने दावत दे रखी थी। दावत में शहर के नामी गिरामी और छोटे–बड़े जानवरों भी आए थे और वे पकवानों का आनंद ले रहे थे। रैनी खेमा के अंदर घुस गयी। शामियाना की छत पर झूले जगमगाते बल्ब की रोशनी में भोंभों भौंरा, पीपी पतंग, जगमग जुगनू, स्वीटी मधुमक्खी, झींग–झींग झींगुर, टिट्टू टिड्डी, फड़फड़ पतंगा, पंख वाला काला चींटा चूनू, पंख वाली काली चींटी चीनी की बिरादरी के साथ–साथ छोटे–छोटे और खेतों में रहने वाले रंगबिरंगे कीड़े हर बल्ब की रोशनी में घेरा बनाकर थिरक रहे थे। उनका दीपक प्रेम देख रैनी के पंख और पाँव थिरकने लगे। नाचने के लिए वह बल्ब की रोशनी के पास चल दी।

''आओ हमारे पास! हमारे साथ साझा करो। कहाँ से आयी हो? मेरा नाम भोंभों है।'' रैनी के पास जाकर भोंभों ने रैनी का परिचय पूछकर अपना नाम भी बता दिया।

''मेरा नाम रैनी है और मैं चंपकवन से आयी हूँ।'' रैनी ने अपना नाम के साथ कहाँ से आयी है उसका नाम भी बता दिया।

''ओहो! चंपकवन! वह चंपक वन जिसकी कहानियाँ बच्चे बड़े मजे से पढ़ते हैं। मेरे बच्चे भी चंपक वन की कहानियाँ बहुत पढ़ने हैं।'' भोंभों ने कहा और रैनी के साथ नाचने लगी। रैनी अपने पीले चटकीले रंग से चमचमाती रोशनी में खूब फब रही थी। सबकी दृष्टि रैनी पर टिकी थीं। स्वीटी शामियाने की छत का एक कोने में लगे बल्ब की रोशनी में नाच रही थी। रैनी को देखकर स्वीटी उसके पास चल दी।

''वाह! तुम्हारे पाँव और पंख तो एक साथ ताल मिलाकर थिरकते हैं। नाच तुम्हारा बड़ा लाजवाब है। कहाँ से आयी हो? क्या नाम है? मेरा नाम तो स्वीटी है।'' रैनी की तारीफ करके स्वीटी ने रैनी का नाम पूछा और अता–पता पूछकर अपना नाम भी बता दिया।

''मेरा नाम रैनी है और मैं चंपकवन से आयी हूँ।'' रैनी ने अपना नाम के साथ कहाँ से आयी है उसका नाम भी बता दिया।

''ओहो! चंपकवन! वह चंपक वन जिसकी कहानियाँ बच्चे बड़े मजे से पढ़ते है। मेरे बच्चे भी चंपक वन की कहानियाँ बहुत पढ़ते हैं।'' भोंभों ने कहा और रैनी के साथ नाचने लगी।

रैनी अपने पीले चटकीले रंग से चमचमाती रोशनी में खूब फब रही थी। सबकी नजरें रैनी पर टिकी थीं। स्वीटी शामियाना की छत का एक कोना में लगा बल्ब की रोशनी में नाच रही थी। रैनी को देखकर स्वीटी उसके पास चल दी।

''वाह! तुम्हारे पाँव और पंख तो एक साथ ताल मिलाकर थिरकते हैं। नाच तुम्हारा बड़ा लाजवाब है। कहाँ से आयी हो? क्या नाम है? मेरा नाम तो स्वीटी है।'' रैनी की तारीफ करके स्वीटी ने रैनी का नाम पूछा और अता-पता पूछकर अपना नाम भी बता दिया।

''चंपक वन से। और मेरा नाम रैनी है।'' रैनी ने थिरकते हुए मासूमियत से कहा।

''चंपक वन! मैं तो चंपक वन कई बार अपनी बिरादरी के साथ गयी हूँ। बड़ा खूबसूरत वन है। शहद बनाने के लिए अधिकांश हमें चंपक वन जाना पड़ता है। वहाँ फूलों के अनेक बगीचे हैं। बहुत अच्छा तुम नाच रही हो। मगर संभल कर नाचना। उस कोना में देख रही हो? छींछीं, फूंफूं और डुंगडुंग छिपकलियाँ घात लगा कर बैठी हैं। बड़ी दुष्ट है तीनों।'' स्वीटी ने रैनी को सावधान कर दिया।

''स्वीटी बहन! मुझसे उलझना बहुत महँगा पड़ेगा। चकमा देने का हुनर है मेरे पास!'' रैनी ने विश्वास के साथ इठला कर कहा और नाचने में मग्न हो गयी। रैनी बेपरवाही से थिरक रही थीं। उसकी थिरक से रीझ कर जगमग रैनी के पास हो आया।

''तुम्हारी थिरक सर्वश्रेष्ठ है। मुझे तो थिरकना नहीं आता। थोड़ी देर के लिए तुम मेरी शिक्षिका बन जाओ और मुझे थिरकना सिखा दो। चलो-चलो मेरे साथ?'' रैनी को जगमग एक कोना में जबरन ले गया, जहाँ भीड़ नहीं थी और १-२ पतंगे नाच रहे थे।

''हाँ तो शुरू हो जाओ मेरे साथ।'' कहकर रैनी थिरकने लगी। उसके साथ जगमग भी थिरकने लगा। थोड़ी देर के बाद जगमग के पंखों से रोशनी चमक उठी। जगमग की चमक से रैनी की आँखें झिलमिलाने लगी। रैनी के सामने कुछ नहीं सूझ रहा था। छींछीं, फूंफूं और डुंगडुंग छिपकलियाँ मौका की तलाश में रैनी के पीछे पड़ी थीं। मौका देखकर तीनों रैनी के ऊपर झपट पड़ीं। मगर रैनी तत्परता से दूर हट जाने में सफल हो गयी। छींछीं, फूंफूं और डुंगडुंग नीचे दावत उड़ाते जानवरों की भीड़ में गिर गयीं।

नीचे लम्बू जिराफ अपने परिजनों के साथ पकवानों की थाली लेकर गप्पें हाँक रहा था।

छिपकलियाँ एक साथ लम्बू की थाली में गिरीं। थाली में एकाएक तीन छिपकलियों को देख लम्बू हक्का-बक्का हो गया और सिहरकर थाली से छींटें अगल-बगल के जानवरों की ड्रेस पर छा गये। वहाँ कोहराम मच गया। दावत का आनंद किरकिरा हो गया तो क्रोध में आकर लम्बू छिपकलियों को ढूँढ़ने लगा। लेकिन भीड़ में छिपकलियाँ अपनी-अपनी जान बचाने में सफल हो गयीं। नाचते-थिरकते फड़फड़ रैनी को देख रही थी। दुष्ट छींछीं, फूंफूं और डुंगडुंग के चंगुल से रैनी बाल-बाल बच गयी, वरना!

फड़फड़ ने रैनी के पास जाकर चेताया, ''जगमगाते बल्बों के पास अब थिरकना बंद करो। ये दुष्ट छिपकलियाँ अपनी करतूतों से बाज आने वाली नहीं हैं। संभल-संभल के रहना इनसे।''

चेतावनी समझ गयी रैनी और जगमगाते बल्बों से दूरियाँ बनाकर वह जानवरों की भीड़ में मंडराने लगी।

बंदू बंदर सिर हिला-हिलाकर पकवानों का आनंद ले रहा था। चिंपा चिंपाजी अपनी पत्नी चिंपी और बेटा चिंजा के साथ गप्पें झाड़ते मजेदार खाना खा रहे थे। जम्बू जेब्रा परिजनों के साथ खाने-पीने में मग्न दिख रहा था। गोधू गधा, चिंटू, चीता, गमगम गैंडा, शिरा शेर और चुलबुल खरगोश अपने-अपने परिवार वालों के साथ शानदार दावत का आनंद ले रहे थे। रैनी इनके आस-पास मंडरा रही थी।

तभी चिंपा का बेटा चिंजा ने रैनी को देख लिया। सुन्दर-सुडौल रैनी को देख वह मचल उठा और अपनी माँ चिंपी से जिद करने लगा, ''माँ! देखो ना? कितनी सुन्दर तितली मंडरा रही है। मुझे ला दो ना?''

सचमुच बहुत सुन्दर तितली मंडरा रही थी। रैनी को देख भला पागल कौन नहीं हो सकता? चिंजा की मम्मी पकवानों की थाली टेबल पर रखकर रैनी के पीछे पड़ गयी। मगर चतुर रैनी थोड़े उसकी पकड़ में यों आ जाती? चकमा देने के लिए वह उपर-नीचे और दायें-बायें मंडराने लगी। पीछा करते आखिर चिंजा की माँ गमगम से टकरा गयी। गमगम की थाली हाथ से छूटकर चिंजा की माँ की साड़ी पर छितरा गयी। मसालेदार पकवानों के छींटों से साड़ी बदरंग हो गयी। भीड़ में लजा गयी चिंजा की माँ।

''मैं तितली के पीछे परेशान हूँ। मेरी साड़ी बर्बाद हो गयी और आप गप्पें हाँकते मजे ले रहें हैं।'' चिंजा की माँ ने खीझ कर उसके पिताजी से कहा।

''क्या हुआ?'' चिंजा के पापा ने हैरानी से पूछा। ''वह देखिये। कितनी सुन्दर तितली है। जाकर पकड़ लीजिए। चिंजा उसे घर ले जाएगा। जल्दी कीजिए! हरी अप! वरना भाग जाएगी।'' चिंजा की माँ ने आँखें मटका कर आदेश दिया।

''अच्छी बात है। पकड़ता हूँ।'' कहकर चिंजा के पिता ने पकवानों की थाली रख दी और धक्कम-

धुक्की करते सैनी के पीछे पड़ गया। चकमा देने के लिए रैनी उपर और उपर उड़ने लगी। चिंजा के पापा सिर उपर करके रैनी का पीछा कर रहा था। तभी लम्बू की पत्नी से उसका टक्कर हो गया।

''सॉरी मेम! वेरी सॉरी!'' ग्लानि से बोझिल सिर झुका कर चिंजा के पिता अपनी जगह शांत चला गया। रैनी फिर से चिंजा के करीब आकर चक्कर मारने लगी।

''माँ, माँ। देखो देखो! तितली फिर से आ गयी।'' चिंजा ने बिस्मित होकर अपनी माँ से कहा। रैनी को देखकर वहाँ खड़ा गोधू ने सुझाव दिया, ''तितली ऐसे पकड़ में नहीं आने वाली। जाल लाकर फंसाइये।''

''जाल कहाँ से आयेगा।'' चिंजा के पापा ने कहा।

''तितली क्या मछली है, जो जाल में फंसेगी? गधे का दिमाग? एक लम्बा डंडा ले आइए। बस डंडे का डर से वह नीचे आ जाएगी।'' शिरा ने नायाब तरकीब सुझायी। उपाय उचित लगा।

हर जानवर की दृष्टि अब रैनी के ऊपर थिरकने लगी। छटपट और कालू डंडा लाने खेमा से निकल पड़े। पर खाली हाथ वापस आ गए।

झींग झींग जानवरों की मंशा समझ गया। रैनी के पास जाकर कान में फुसफुसाया, ''रैनी तुम्हारी जान खतरे में पड़ सकती है। सचमुच तुम बहुत सुन्दर हो। तुम्हारी सुन्दरता ने जानवरों का मन मोह लिया है। तुम्हें पकड़ कर ले जाना चाहते हैं! जल्दी खेमा से भाग जाओ।''

अपने सिर पर खतरा मंडराते देख रैनी खेमा से बाहर निकल आई। बाहर रंगबिरंगे फूलों के गमले रखे हुए थे। ये वह फूलों के गमले थे, जिनके उपर सवार होकर ट्रक से वह शहर आ गयी थी। बहुत देर तक नाचने और थिरकने के कारण उसको भूख लग रही थी। इसलिए फूलों का रस चूसने लगी।

तभी चिंजा का शोर सुनाई पड़ा। वह निराश होकर अपने माता-पिता के साथ खेमा के साथ निकल आया था, ''माँ-पिताजी! देखिए? वह तितली यहाँ फूल पर बैठी है।''

''तितली रानी! अब तू कहाँ भागेगी? भीड़ में चकमा दे गयी थी।'' रैनी को अपनी पकड़ में लाने के लिए चिंजा की माँ ने कमर कस ली। साड़ी का आँचल संभाल कर वह रैनी के पास झटके से लपक गयी। पर साड़ी का पल्ला गुलाब के काँटेदार तने में फँस गया और वह औंधी गिरी। रैनी फुर्र करके ऊपर मंडराने लगी।

''पिताजी, पिताजी! माँ को जल्दी उठाइये। वरना तितली भाग जाएगी?'' चिंजा ने शोर मचाया। चिंजा के पिता के साथ जानवर लपक आये चिंजा की माँ को उठाने के लिए।

''कमबख्तो! तितली का पीछाा छोड़ दो। यह साधारण तितली नहीं है। बड़ी चतुर और साहसी है।'' चिंजा के पिता ने कहा।

जान की नौबत आती देख रैनी ने रफ्तार से उड़ान भरी और अँधकार में ओझल हो गयी। थोड़ी देर के बाद रैनी जगमगाती सड़क की तरफ चल दी, तो सड़क किनारे वह ट्रक खड़ा दिखाई पड़ा, जिस ट्रक से वह आयी थी। रैनी ट्रक के पास चल दी। ट्रक खाली था। ट्रक का ड्राइवर गैंडा राम और खलासी भोलू बंदर इंजन वाली सीट पर खर्राटे ले-लेकर सो रहा थे। रैनी ट्रक के अंदर घुस गयी।

दूसरे दिन सुबह ट्रक चंपकवन की सड़क के किनारे वाला ढाबा का शोर से रैनी की नींद उचट गयी। आँखें मलकर उसने बाहर झाँका तो ढाबा का नजारा दिखाई पड़ा। तत्परता के साथ रैनी ट्रक से उतर आई और वाटर टैंक के रिसते पानी के पास बैठ गयी।

– दानाउली
(झारखण्ड)

भीख नहीं सीख

– समीर गांगुली

पात्र– ४, ५ सवारियाँ (पुरुष–स्त्री का अनुपात सुविधानुसार)।

कमला– एक भिखारिन जो हारमोनियम पर फिल्मी गीत गाती है।

बंटा– चालू हॉकर लड़का जो चोरी–पॉकेटमारी की राह पर बढ़ रहा है।

पवन, मट्टी– ये दोनों लोकल में तरह–तरह का माल बेचते हैं पर्स, चार्जर, किताब से लेकर खिलौने तक। सभी बच्चों की आयु १० से १४ वर्ष के बीच हैं।

(मंच को लोकर ट्रेन के एक डिब्बे का रूप दिया जाएगा। जिसमें ऑफिस/काम पर जाने वाली उत्साहहीन सवारियाँ होंगी। चार–पाँच। हॉकर। भिखारी बारी–बारी से आते जाते रहेंगे, अभी ट्रेन प्लेटफॉर्म पर खड़ी है। पर्दा उठता है।)

अनाउंसमेंट– प्लेटफॉर्म २ पर खड़ी ट्रेन चर्चगेट जाने वाली धीमी लोकल है। यह सभी स्टेशनों पर रुकेगी।

(इस घोषणा के साथ सवारियाँ डिब्बे पर आकर बैठने लगती है। फिर साऊण्ड और लाइट के इफेक्ट से ऐसा दिखाया जाएगा, जैसे ट्रेन चल पड़ी है। यानी डिब्बे के गतिशील होने का आभास मिलना चाहिए।)

(कमला का हारमोनियम पर फिल्मी गाना बजाते हुए प्रवेश।)

कमला– (गाने के बीच रुककर) ओ चश्मे वाले बाबू! दे ना दस रुपए। (फिर से गाना शुरू, बीच में रुककर) ओ बंटे! कैसाा है रे तू? ओ मैडम! वड़ा–पाव अकेले–अकेले खा रही है, दे ना?

औरत सवारी– कमबख्त एक वड़ा पाव भी नहीं खाने देती चैन से। नजर तो देखो भिखारन न होकर डाकू हो गई।

कमला– ओ, मैडम! गाली मत दे। भिखारी नहीं हूँ कलाकार हूँ। अब तुम लोगों को अपनी कदर नहीं तो क्या करूँ। (अब दूसरा गाना गाते हुए सवारियों के आगे हाथ फैलाती है। एक सवारी दस रुपए पकड़ाती है तो गाना रोककर उसे दुआ देती है। उसके दाएँ विंग से निकलने के साथ मट्टी का प्रवेश। उसके गले में मोबाइल की तरह–तरह की एक्सेसरीज लटकी है। दोनों हाथों में भी चार्जर आदि हैं।)

मट्टी– चार्जर, ईयरफोन, पावरबैंक सब मिलेगा। एप्पल, सैमसंग कंपनी का। अपन डुप्लिकेट के भाव पे ओरिजिनल माल बेचता है। टिकाऊ माल की गारंटी। नया स्टॉक है। चाहिए किसी को? बोहनी का टाइम है। है कोई अपना वेलविशर?

एक सवारी– क्या बात है वेलविशर। अँग्रेजी बोलता है रे छोकरे!

मट्टी– अरे साहब! फुरसत नहीं है वरना ऐसी अँग्रेजी सुनाता कि आप भी बोलता–वेल डन मट्टी। तुस्सी ग्रेट हो।

दूसरी सवारी– ओय इधर आ। बटुआ है क्या तेरे पास।

मट्टी– साब! गाँव से आया है क्या जो पर्स को बटुआ कहकर उसका इंसल्ट करता है।

दूसरी सवारी– शाबाश बेटा! तू खूब तरक्की करेगा। लगता है पढ़ाई भी करता है।

मट्टी– हाँ, साब! अपन नाइट स्कूल में जाता है। शेट्टी सर अपने को गधे से आदमी बनाने की कोशिश कर रहा है।

तीसरी सवारी– तेरा सेंस ऑफ ह्यूमर तो कमाल का है दोस्त। ला एक सेट बॉल पेन दे।

मट्टी– बॉल पेन आज नहीं है। कल लाऊँगा, पक्का।

तीसरी सवारी– ठीक है याद रखना। ब्लैक इंक वाला।

चौथी सवारी– अरे, तेरा वो दोस्त कहाँ है जो

किताबें बेचता है?

मट्टी– कौन वो पवन? आएगा सर चर्चगेट से पहले आ टपकेगा।

अनाउंसमेंट– अगला स्टेशन– विले पार्ले। अंतिम स्टेशन–चर्चगेट।

मट्टी– कोई और है पर्स खरीदने वाला? चलते–चलते बता दूँ। ये बड़े लकी पर्स है। इसे जो खरीदेगा, उसकी जेब कभी खाली नहीं रहेगी। बड़े–बड़े नोटों से भरी रहेगी। बस वैधानिक चेतावनी इतनी है लाल और हरे रंग के बालों वाले बंटा से होशियार रहना। आजकल वो जेबकतरा बनने की ट्रेनिंग ले रहा है। इसलिए वो आसपास हो तो एक हाथ अपनी जेब पर रखना। पर्स को उससे पकड़े रहना और दूसरे हाथ को उसकी गर्दन दबाने के लिए तैयार रखना।

अगला स्टेशन– सांताक्रुज। आखिरी स्टेशन– चर्चगेट।

पहला सवार– बच्चे! अपने दोस्त का राज बता रहा है, तुझे डर नहीं लगता जेबकतरे अब तेरे पीछे नहीं पड़ जाएँगे।

मट्टी– क्या करूँ साब! दोस्ती का फर्ज निभा रहा हूँ। अपने दोस्त को जेबकतरा होने से बचा रहा हूँ।

पहला सवार– सच, दोस्त हो तो तेरे जैसा।

(ट्रेन के रुकने जैसा आभास। दो सवारी उतरती है। तीन सवारियाँ चढ़ती है। ट्रेन के चलने का आभास। हॉकर पवन का बाएँ विंग से प्रवेश।)

पवन– किताब दोस्त आया। किताबों का खजाना लाया। सोनू–मोनू के लिए अक्षर ज्ञान। अलका–पद्मा के लिए गणित की पहेलियाँ, दादू–चाचू के लिए धर्म और विज्ञान की बेस्ट सेलर। जो चाहिए वो मिलेगा। आज नहीं मिले तो कल लेकर आएगा। आ गया है आपका किताब दोस्त पवन कुमार।

चौथी सवारी– अरे पवन पढ़ाकू! चल इधर आ जा।

पवन– नहीं साहब! आपको टाइम पास करना है, और अपुन को धंधा करना है। आप बातें २४ कैरेट की करते हैं लेकिन फोकट में। किताब खरीदते नहीं और...

पाँचवी सवारी– आज हमारे पवन दोस्त का मूड उखड़ा हुआ है। चल इधर आ। मेरी किताब लाया– ऊपर वाले का कारखाना।

पवन– लाया साहब! मैंने भी कल रात पढ़ डाली साहब। क्या कमाल की किताब है। पढ़कर ऐसा लगा हमारी मतलब मट्टी, जोगी और बंटे की ही कहानी है। लो साहब तीन सौ दे दो।

पाँचवी सवारी– हाँ, दे। और मैं तुझे एक किताब देता हूँ। ये भी पढ़ पुरानी है मगर बढ़िया कहानियाँ है– ओ। हेनरी की कहानियाँ।

अनाउंसमेंट– अगला स्टेशन, बांद्रा...

पवन– अरे, खार रोड कब निकल गया, पता ही नहीं चला। हाँ, साहब! टाइम निकाल कर पढ़ेगा। किसी और को किताब चाहिए– हैरी पॉटर से लेकर चेतन भगत, हेनरी आर्चर, सुधा मूर्ति....

चौथी सवारी– पवन कुमार, आज शेरो–शायरी नहीं सुनाएगा। वो माँ वाली सुना ना एक बार।

पवन– सुनिए, मेरी ख्वाहिश है कि मैं फिर से फरिश्ता हो जाऊँ। माँ से इस तरह लिपट जाऊँ कि बच्चा हो जाऊँ।

सभी सवारियाँ– (एक साथ)– वाह–वाह!

पवन– एक और सुनिए, वही पुरानी वाली... किसी को घर मिला हिस्से में या कोई दुकां आई, मैं घर में सबसे छोटा था, मेरे हिस्से में माँ आई।

सभी– वाह–वाह।

पवन– अब जनाब नए जमाने की करारी–प्यारी शायरी का मजा लेना हो तो जॉन एलिया को पढ़िए, बंदा क्या सिंपल लिखता है और गदर मचाता है।

पहली सवारी– पवन! वो किताब मुझे पकड़ा। तूने पढ़ी क्या?

पवन– मैं भी बहुत अजीब हूँ, इतना अजीब हूँ कि बस खुद को तबाह कर लिया और मलाल भी नहीं।

पहली सवारी– क्या बात है। एक और हो जाए।

पवन– सारी दुनिया के गम तुम्हारे हैं। और सितम ये कि हम तुम्हारे हैं।

सभी– वाह–वाह!

एक सवारी– ला भई! ये जॉन एलिया तो मेरा हो गया।

दूसरी सवारी– भई, एक मुझे भी दिखाओ।

पवन– कल लाऊँगा अंकल, जॉन एलिया आज खत्म। निदा फाजली ले लो। अपना मुंबई का शायर है। खालिस खार–बांद्रा का। ओ... साहब आज खाली स्माइल मारता है और अपन का वीडियो बनाता रहता है। कुछ खरीदता नहीं। मामला क्या है?

छठी सवारी– ले पहले तू दो हजार का अपना हिस्सा पकड़। फिर बताता हूँ।

पवन (हैरानी से)– दो हजार? अपना हिस्सा? सर, अपने जरिए कोई खोटी काम तो नहीं करवाने का। अपन को कोई लपड़ा नहीं चाहिए। वैसे ही बंटा के चक्कर में पुलिस के आगे हाथ जोड़ता फिर रहा हूँ।

छठी सवारी– अरे सुन तो....

अनाउंसमेन्ट– अगला स्टेशन....

छठी सवारी (चिढ़कर)– हाँ, मालूम है अगला स्टेशन दादर है। बाहर बढ़िया वडा–पाव मिलता है। फ्लावर मार्केट है। अपन को नहीं उतरने का... हाँ तो पवन बाबू! सुनो... दो हजार के इस किश्त की कहानी।

एक सवारी– कहानी में पेंच है क्या? बंदे का वीडियो बनाना अभी भी चालू है।

छठी सवारी– मैं एक ब्लॉगर हूँ। प्रोफेशनल ब्लॉगर। यू–ट्यूब पर एक चैनल चलाता हूँ। नाम है UNCUT DIAMONDS। उसमें मैंने तुम्हारे बारे में कुछ वीडियो डाले थे।

पवन– किसके सर.... मेरी गरीबी के... मेरी मजबूरी के।

छठी सवारी– नहीं पवन! तुम्हारे इस हुनर के। इसे स्टोरी टेलिंग कहते हैं। तुम जिस अंदाज से अपनी बात कहते हो उसे लोग बहुत पसंद करते हैं। तुम्हें

हजारों लोग बहुत चाहते हैं, तुमसे प्यार करते हैं।

दूसरी सवारी– हाँ, ये सच कह रहे हैं। इनका चैनल बहुत पापुलर हो रहा है आजकल। मैंने भी देखा है। लेकिन मैं नहीं जानता था ये हमारे लोकल डिब्बा परिवार के ही एक मेंबर हैं।

सब हँसते हैं।

एक आवाज– अच्छा नाम है हमारा लोकल डिब्बा परिवार।

छठी सवारी– और पवन! इससे मुझे अच्छी कमाई भी हो रही है। उसी का हिस्सा तुम्हें दे रहा हूँ।

पवन (खुश होकर)– बस इतना आसान काम। और इतनी बढ़िया कमाई। तो सर इसे करते रहिए। अपना हिस्सा देते रहिए।

(तभी बाहर से कमला की आवाज)

कमला– पवन! कलटी मार। तिरछा पुलिस वाला तुझे ढूँढ़ रहा है, बंटे ने फिर कोई गड़बड़ की है।

पवन (खिड़की से बाहर देखते हुए)– तू फिक्र मत कर कमला। वो अच्छा पुलिस वाला है। वो बंटे को जेबकतरा बनने से रोक रहा है। मैं मिलता हूँ उससे। (मुड़कर) हाँ तो सर अब कुछ नया.... ?

छठी सवारी– कुछ अलग करना चाहोगे ?

पवन– कैसा अलग सर ? मेरे बस का हो और गलत ना हो। मैं सरवर की तरह स्टंट दिखाने के खिलाफ हूँ सर।

छठी सवारी– ठीक है। तुम लिखना–पढ़ना भी जानते हो ना ?

पवन– हाँ सर। हम सब हॉकर शेट्टी सर के नाइट स्कूल में जाते हैं। दादर फ्लाईओवर के नीचे।

छठी सवारी– तो तुम्हें अपनी, अपने दोस्तों की कहानी सुनानी होगी। खुशी की कहानी। दु:ख की कहानी। किसी को पाने की कहानी, किसी को खोने की कहानी। और ये कहानी हम ब्लॉगिंग और पॉडकास्ट के जरिए दुनिया तक पहुँचाएँगे।

पवन– मगर ये काम तो मैंने कभी किया नहीं। पता नहीं कर पाऊँगा भी कि नहीं। और कहानी लिखना तो बड़े, खूब पढ़े–लिखे लोगों का काम होता है।

छठी सवारी– इसमें भी बदलाव आना चाहिए।

अनाउंसमेंट– अगला स्टेशन मुंबई सेंट्रल। बाहरगाँव जाने वाले यहाँ से गाड़ी बदलें।

छठी सवारी– ये अनाउंसमेंट करने वाला मुझे जरा भी पसंद नहीं।

एक पारसी बाबा (सामान के साथ उतरते हुए)– लेकिन ढिकरा मुझे पसंद है। मुझकू यहींच उतरना था। वो नहीं जगाता तो सूरत की गाड़ी छूट जाती।

पवन– पेस्टन जी जल्दी उतरो, नहीं तो ये गाड़ी भी छूट जाएगी।

छठी सवारी– तो पवन! शाम को छ: बजे नाइट स्कूल वाली जगह पर मिलते हैं। कहानी लिखने के तरीके के बारे में बात करते हैं। मैं कॉपी–पेन भी लेता आऊँगा और हर एपिसोड पर पैसे की बात भी कर लेंगे।

पवन– ओके सर! आज अपुन को हीरो जैसा फीलिंग मिल रहा है। जरूर मिलेंगे सर! साथ मिलकर कुछ करेंगे। (कमला का एक भजन गाते हुए डिब्बे में प्रवेश। बंटा भी पीछे से आता है।)

बंटा– पवन, चल तुझ पर अहसान करता हूँ। पॉकेटमार नहीं बनूँगा। स्टेशन पर बूट पॉलिश का धंधा करूँगा। तू कुछ रोकड़ा दे।

पवन– ले (उसे दो हजार पकड़ाता है।)

बंटा– (चौंककर) इतने सारे ?

पवन– दोस्ती की खातिर कम हैं।

(दोनों दोस्त गले लग जाते हैं, सारी सवारियाँ ताली बजाती है। मट्टी भी डिब्बे में आता है।)

मट्टी– पवन पता है यार मैंने तेरा एक वीडियो देखा। तू क्या शायरी मारता है यार.....

सब हँसते हैं। (पर्दा गिरता है।)

– मुंबई
(महाराष्ट्र)

लघुकथा

घमंडी हाथी

– मीरा जैन

जंगल का सबसे विशालकाय हाथी मोधा अपने आपको किसी शहंशाह से कम नहीं आँकता था। जंगल के छोटे-मोटे प्राणियों को अपने पैरों की धूल से अधिक कुछ नहीं समझता। जंगल के सभी जानवर उससे डरते थे।

कोई उसके पास फटकने का साहस नहीं करता। आज अचानक मोधा का सबसे छोटा बेटा टुनटुना खेलते-खेलते अचानक कुएँ में गिर गया। यह बात जंगल में आग की तरह फैल गई।

मोधा को भनक लगते ही वह दौड़ पड़ा अपने बेटे को बचाने के लिए क्योंकि उसे ज्ञात था कि उसके अतिरिक्त कोई भी उसके टुनटुना को नहीं बचा पाएगा।

अंधाधुंध दौड़ने के कारण रास्ते में एक नुकीला काँटा चुभ गया। मोधा के लिए एक कदम भी चल पाना कठिन हो गया और वह वहीं खड़ा हो कराहने लगा। उसकी आवाज सबने सुनी। पर कोई भी उसके पास फटकने नहीं गया। वहीं पास ही बिल से एक छोटा-सा चूहा बाहर आया उससे हाथी की हालत देखी नहीं गई और उसने अपनी जान की परवाह किए बिना ही अपनी पूरी ताकत लगा अपने मुँह से काँटा निकालने लगा।

कुछ ही देर में चूहे ने हाथी के पैर से काँटा निकाल दिया। मोधा ने राहत की साँस ली और चूहे को अपनी पीठ पर बैठा दौड़ पड़ा कुएँ की ओर। और वहाँ पहुँचते ही मोधा ने चूहे को अपनी गद्दी पर बिठाने के पश्चात सबसे पहले टुनटुना को कुएँ से सकुशल बाहर निकाला। टुनटुना बाहर निकलते ही मोधा से चिपक कर रोने लगा-

''पिताजी! आज आप समय पर नहीं आते तो मैं मर गया होता।''

मोधा ने टुनटुना को सांत्वना देते हुए कहा- ''बेटा! आज यदि मेरी इस चूहे ने सहायता नहीं की होती तो शायद...।''

इतना कहते-कहते मोधा की आँखों से अश्रु बहने लगें। उसने पूरे जंगल के हाथियों को आदेश दिया- ''आज के बाद जंगल का कोई भी प्राणी हमारे लिए छोटा नहीं होगा मुझे समझ में आ गया है कि प्राणी कोई भी छोटा-बड़ा नहीं होता है। बस हम केवल अपना शरीर देखकर अहंकार करते हैं। आज इस छोटे से चूहे के कारण ही हमारा टुनटुना जीवित है। आज से इस जंगल का छोटे से छोटा प्राणी भी हमारा मित्र है। कोई भी हाथी किसी भी जानवर का शिकार नहीं करेगा।''

सारा जंगल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा और मोधा हाथी चूहे को गोद में उठा नाचने लगा। उस दिन के बाद जंगल में प्रसन्नता का साम्राज्य छा गया।

– उज्जैन (म. प्र.)

सदैव बाल साहित्य उत्कर्ष के अभिलाषी रहे

डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय'

निज लेखन के साथ-साथ बाल साहित्य के उत्कर्ष की भी कामना के साथ जीने वाले लेखकों में डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव का नाम श्रद्धापूर्वक लिया जाता है। वे मूलत: प्रौढ़ साहित्य के लेखक और सम्पादक थे किन्तु सदैव बाल साहित्य को समान महत्व देते हुए समर्पित रहे।

उन्होंने साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य के स्तम्भों को सम्मानजनक स्थान देकर समाज के समक्ष समग्र पत्रकारिता का उदाहरण रचा। बाल साहित्य के लेखकों के साथ-साथ बच्चों की रचनाओं को भी प्रचुर प्रोत्साहन देकर भावी पीढ़ी में साहित्यिक रुचि की संभावनाओं को सिंचित किया।

डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव का जन्म १५ जुलाई १९२१ को कैथन का पुरवा, सेमरपहा, लालगंज में हुआ था। माता रुक्मिणी देवी और पिता शिवनारायण लाल से उन्हें जीवनोपयोगी संस्कार प्राप्त हुए जो आजीवन उनके व्यक्तिगत और साहित्यिक जीवन में परिलक्षित होते रहे। वे स्वभाव से बड़े ही सरल और उदारमना थे।

१५ वर्ष की अल्प वय में ही उन्होंने लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था। वर्ष १९३६ ई. में, जब वे आठवीं कक्षा के छात्र थे, उन्होंने 'निकुंज' शीर्षक से बाल खण्डकाव्य की रचना कर दी थी।

उनकी लेखकीय प्रतिभा गजब की थी। उन्होंने विविध विधाओं में लेखन किया। बाल साहित्य में भी उनकी विशेष अभिरुचि रही। पत्र-पत्रिकाओं में उनकी बाल कहानियों और कविताओं का प्रकाशन होता रहा। बाल साहित्य के प्रमुख संकलनों में भी उनकी रचनाएँ देखी जा सकती हैं।

बड़ों के लिए उन्होंने गद्य और पद्य की विधाओं में दो दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं। बच्चों के लिए भी उनकी दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। 'नाच दिखा रे मोर' पुस्तक में उनकी बाल कविताएँ हैं और 'मेहनत का फल' में बाल कहानियाँ। उन्होंने बच्चों की लिखी रचनाओं के संकलनों का संपादन भी किया। 'बच्चों की स्वरचित कहानियाँ' और 'बच्चों की स्वलिखित कहानियाँ' पुस्तकों के माध्यम से बच्चों में छिपी सृजनात्मक संभावनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए उनके योगदान की सदैव सराहना की जाएगी।

श्रीवास्तव जी ने 'भारतीय बाल साहित्य के

विविध आयाम' और 'बाल कल्याण में बाल साहित्य की भूमिका' पुस्तकों के सम्पादन में विशेष भूमिका निभाई। ये ऐसी कृतियाँ हैं जिनका बाल साहित्य शोधार्थियों के लिए सर्वकालिक महत्व है।

वे उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान में प्रधान सम्पादक रहे।

उन्होंने बड़ों के लिए अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। उल्लेखनीय बात यह है कि सभी में उन्होंने प्रमुखता के साथ बाल साहित्य भी प्रकाशित किया। वे साहित्यिक पत्रिकाओं में अनिवार्य रूप से बाल स्तंभ रखने के पक्षधर थे।

साप्ताहिक जयभारत (कानपुर) का स्तंभ 'बाल विनोद', 'श्रमजीवी मासिक' (कानपुर) का 'बाल फुलवारी', 'स्वतंत्र भारत सुमन' (लखनऊ) का 'बाल जगत', 'गरिमा भारती' (लखनऊ) का 'बालवीथी', 'सानुबन्ध' (लखनऊ) का 'बाल जगत' और 'भारतीय उद्देश्य' (लखनऊ) का स्तंभ 'बाल साहित्य' भावी पीढ़ी से उनके अनन्य प्रेम का उदाहरण हैं।

बाल साहित्य के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान और भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर ने पुरस्कृत किया।

बच्चों में नैतिक मूल्यों के प्रस्फुटन हेतु बाल साहित्य की आवश्यकता के पक्षधर श्रीवास्तव जी ने लगभग छः दशकों तक लेखन और संपादन के माध्यम से साहित्य की अनन्य सेवा की।

२४ जुलाई २०१८ को लखनऊ में उनका निधन हो गया। आइए, उनकी कुछ बालोपयोगी रचनाओं का रसास्वादन करते हैं।

नाम कमाओ

सूर्योदय से पहले उठकर,
ईश्वर के प्रति श्रद्धा से भर।
अपना पाठ याद जो करते,
कक्षा में वे आगे रहते।

रात शीघ्र जो सो जाते हैं,
नहीं व्यर्थ जगते रहते हैं।
नींद उन्हें गहरी आती है,
स्वस्थ ताजगी भर जाती है।

जल्दी सोना, जल्दी उठना,
समय व्यर्थ में कभी न खोना।
जीवन का उद्देश्य बनाओ,
बढ़कर सुन्दर नाम कमाओ।

नटखट बंदर

घास उगी थी हरी–हरी,
जिसे चर रही थी बकरी।
वहीं पेड़ से नटखट बंदर,
कूद पड़ा बकरी के ऊपर।
चौंकी, उछली–कूदी बकरी,
देह झिटक कर घूमी बकरी।
नहीं पीठ से उतरा बंदर,
रहा डराता खों–खों–खों कर।
'में–में' करती बकरी भागी,
तभी गिलहरी सोते जागी।
वह कूदी बंदर के ऊपर,
काटा दाँतों से भी कसकर।
छोड़ भगा बकरी को बंदर,
उछल पेड़ पर बैठा जाकर।
'टिली–टिली' कर हँसी गिलहरी,
खूब चिढ़ाती रही गिलहरी।

देश हमारा

कौन देश जो सबसे न्यारा,
जिस पर सबका तन–मन वारा।
वह है अपना भारत देश,
विविध रंगों का जिसका वेश।
पर्वत के हैं शिखर कहीं पर,
सरिताओं की लहर कहीं पर।
कहीं मरुस्थल कहीं घने वन,
कहीं खेत हैं, प्यारे मधुवन।
झील, सरोवर, नद–नाले हैं,
अमृत जैसे जल वाले हैं।
आमों के बागों में कोयल,
जलाशयों में हंसों के दल।

कभी ग्रीष्म तो शीत कहीं पर,
वर्षा का मधु गीत कहीं पर।
कभी अमावस का अँधियारा,
कभी पूर्णिमा का उजियारा।
मस्जिद कहीं, कहीं गुरुद्वारे,
भाँति–भाँति के मंदिर न्यारे।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई,
घुलमिल रहते ज्यों हों भाई।
रंगों वाली यही विविधता,
रमती जिसमें सदा एकता।
यहीं जन्म दे सदा विधाता,
टूटे कभी न इससे नाता।

बादल का संदेश

उमड़-घुमड़ कर नभ में छाए, क्या संदेशा बादल लाए?
ये बादल सागर से आए, गागर पर गागर भर लाए।
तृप्त हुए जो अब तक तरसे,
कहाँ नहीं ये बादल बरसे।
वन, उपवन, ऊसर, परती हो,
फसलों से छायी धरती हो।
महल-दुमहले, झोपड़ियाँ हों,
काँटे, फूलों की कलियाँ हों।
सबकी प्यास बुझाया करते,
भेदभाव से नफरत करते।
क्यों बादल आया करते हैं,
कौन संदेशा वे कहते हैं?
यही कि सबको गले लगाओ,
भेदभाव का जहर मिटाओ।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

प्रसंग

कान्हा का संदेश

नटखट कान्हा जी कदम्ब के पेड़ पर छुप कर बैठे थे। गोपियाँ दूध और माखन से भरी मटकियाँ लेकर मथुरा जा रहीं थीं। तभी पेड़ की ओट से एक कंकरी उछली और दूध की मटकी तो फूटी ही गोपी सारी दूध में नहा गई।

गोपी क्रोध से लाल पीली हो गई। किसी ग्वाल बाल ने दूधो नहाओ पूतो फलो कहकर और चिढ़ा दिया।

कान्हा कदम्ब से उतरे और मिश्री जैसी वाणी में समझाने लगे। ''गाएँ चराएँ तुम्हारे पति, गोबर सानी करो तुम। भोर से उठकर दही मथो। माखन निकालो तुम फिर माथे पर इतना भार ढोकर सब बेच आओ दुष्ट कंस और उसके उत्पाती साथियों के लिए और मेरे सखा ग्वालबाल देखते ही रह जाएँ। क्या यह ठीक है? अरी! पहले अपने घर परिवार गाँव के लोगों को 'दूध दही' माखन छकाओ तब बाकी बचा बेचो।

कान्हा के तर्क के आगे गोपी निरूत्तर थीं।

तीन खूँटे

– विमला रस्तोगी

नदी के किनारों पर दो गाँव थे। दोनों गाँवों के निवासी एक ही जाति के थे। उसी नदी का पानी पीते थे। वही नदी उनके खेतों को सींचती थी। फिर भी दोनों गाँवों में दोस्ती नहीं थी। क्योंकि उनमें से एक का मुखिया जादूगर था। अपने जादू के जोर पर वह हमेशा दूसरे गाँव वालों को सताता रहता था।

एक दिन की बात है, मुखिया जादूगर नदी पार कर दूसरे गाँव जा पहुँचा। गाँव वाले घबरा–कर अपने–अपने घरों में छिप गए। जादूगर बोला– ''डरो नहीं। सब लोग यहाँ आओ।''

धीरे–धीरे गाँव वाले जमा हो गए। ''तुम्हारा मुखिया कहाँ है?'' मुखिया जादूगर ने कड़ककर पूछा।

''आवश्यक कार्य से कहीं गए हैं।'' एक गाँव वाले ने उत्तर दिया।

''मैं कल नहीं आ सकता।'' उसने गाँव के बीचों बीच तीन खूँटे गाड़ दिए। फिर बोला– ''मैंने तीन खूँटे इसलिए गाड़े हैं कि अब हमारे गाँव की सीमा यहाँ तक रहेगी। अपने मुखिया से कह देना, इन खूँटों के इस ओर आने का प्रयास न करें। वरना मुझसे बुरा कोई न होगा।'' कहकर जादूगर तेजी से चला गया। किसी गाँव वाले में उसका विरोध करने का साहस नहीं था।

खूँटों को देखकर गाँव वालों ने सोचा– ''अवश्य ये जादू के खूँटे होंगे। पता नहीं, रात कैसी बीतेगी। कहीं ये खूँटे पत्थर बनकर हम पर न बरसने लगे। लगता है, हम पर कोई घोर विपत्ति आने वाली है।''

परेशान गाँव वालों को रात भर नींद नहीं आई। हर आहट से डरते रहे। दिन निकला। उनका मुखिया

वापिस आया। गाँव वालों ने राहत की साँस ली। सारी घटना हूबहू कह सुनाई।

सुनकर मुखिया को बड़ा क्रोध आया। बोला– ''बहुत हो चुका। अब मैं उस जादूगर की हरकत बर्दाश्त नहीं कर सकता।'' कहकर मुखिया ने गुस्से में तीनों खूँटों को उखाड़ दिया। तोड़कर आग में फेंक दिया।

अगले दिन गाँव के लोगों ने आवाज सुनी– ''मैं आ रहा हूँ। मैं आ रहा हूँ।'' गाँव वाले चौकन्ने हो गए। एकाएक उन्होंने देखा कि जादूगर तेजी से उधर आ रहा है। उसके पीछे–पीछे नदी बहती आ रही है। नदी ने जैसे रास्ता बदल दिया था। लोग घबराकर मुखिया के पास आए। मुखिया क्रोध में बड़बड़ाता आया। जोर से बोला– ''अरे जादूगर! तू लौट जा।''

जादूगर ने जैसे सुना ही नहीं। वह बढ़ता रहा। पानी गाँव में भरने लगा था। जादूगर पूरे गाँव को पानी में डुबो देना चाहता था। मुखिया तीर–कमान लेकर आया। क्या देखता है, जादूगर की जगह पानी में एक मछली, एक कछुआ, एक मगरमच्छ तैर रहे हैं। मुखिया जोर से हँसकर बोला– ''मेरे तीर से डर गया। लेकिन बचकर जाएगा कहाँ।'' कहकर मुखिया ने एक तीर मछली को मारा। वह पानी में डूब गई। दूसरा तीर कछुए को मारा। वह भी पानी में डूब गया।

अब बारी मगरमच्छ की थी। मगरमच्छ बार–बार डुबकी लगाता और निशाना चूक जाता। पर उसने हार नहीं मानी। अंत में उसने सही निशाना साथ ही लिया। तीर लगते ही मगरमच्छ भी मर गया। उसके मरते ही पानी लौट गया। जादूगर फिर कभी दिखाई नहीं दिया।

– दिल्ली

विश्वास

– डॉ. शकुन्तला कालरा

पंकज तीसरी कक्षा में पढ़ता था। बहुत ही समझदार और शांत बच्चा था। शाला से आकर अपना गृहकार्य करता और फिर खेलने जाता।

प्रतिदिन की तरह गृहकार्य करने के लिए उसने अपना बैग उठाया। पुस्तक-कॉपी निकालने के बाद अपना पेंसिल-बॉक्स खोला। उसमें सिक्के वाली पेंसिल नहीं थीं। वह उदास हो गया। कल ही वह प्यारी पेंसिल माँ ने दिलाई थी। कैमलिन की लाल रंग की पेंसिल पूरे चालीस रुपये की थी। कक्षा में उसने सारा काम उसी से किया था। भोजन के बाद भी उसके पास थी, पर अचानक कहाँ चली गई।

पंकज सोचने लगा, कल पी. टी. के कालांश (पीरियड) में बाहर पूरी कक्षा मैदान (ग्राउंड) में खेलने गई थी। शायद उसी समय...। या कहीं इससे पहले वाले हिन्दी के कालांश में कक्षा कार्य करने के बाद वहीं छूट गई होगी। वह तरह-तरह की शंकाओं में घिर गया। उसका गृहकार्य में मन नहीं लगा।

वह पुस्तक खोलकर बैठा रहा और सोचता रहा। थोड़ी देर बाद माँ कमरे में आईं तो पंकज को इस तरह बैठे देखकर कहा– ''क्या बात है, आज तुम्हारा मन पढ़ने में नहीं लग रहा। स्वास्थ्य तो ठीक है न?''

''अरे! कुछ बोलता क्यों नहीं?'' माँ ने उसे अपनी गोद में बैठा लिया और प्यार से उसके गालों पर हाथ फेरकर उदासी का कारण पूछा। ''क्या गृहकार्य में कुछ कठिनाई हो रही है? लाओ, मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर दूँ।''

पंकज गृहकार्य में कई बार माँ की सहायता लेता था। कोई भी विषय कहीं से भी कठिन लगता, माँ उसे आसान कर देती।

माँ ने उसके माथे पर हाथ रखते हुए फिर पूछा– ''क्या बात है स्वास्थ्य तो ठीक है न? बुखार तो नहीं लगता। क्या सिर दर्द या पेट दर्द है?''

पंकज माँ का स्पर्श और सहानुभूति पाकर रो पड़ा। उसने सुबकते हुए बताया– ''माँ! मेरी नई पेंसिल कही खो गई।''

''कहाँ खो गई? ध्यान से देखो, बैग में ही होगी। क्या आज शाला ले गए थे? शायद घर में ही भूल गए हो।''

''नहीं माँ! मैं उसे शाला ले गया था, कक्षा का कार्य भी उसी से किया था।'' यह कहते ही उसने बैग का सारा सामान उलट दिया। पेंसिल कहीं नहीं थी।

माँ ने उसे प्यार से समझाया, ''चलने से पहले अपना सामान अवश्य संभाल लेना चाहिए। चलो, कोई बात नहीं। कल शाला जाने पर मिल जाएगी। तुमने वहीं डेस्क पर छोड़ दी होगी।''

पंकज की थोड़ी आस बँधी। उस दिन न गृहकार्य ठीक से कर पाया और न ही रात को ढंग से कुछ खा पाया। रात भर सपने में भी उसे वही प्यारी लाल रंग की सुंदर-सुंदर पेंसिल दिखती रही।

दूसरे दिन वह जल्दी ही उठ गया। झटपट तैयार हो गया। उसे शाला जाने की आज बहुत जल्दी थी। शाला में भी उदास बैठा हुआा खिड़की की तरफ देखता रहा। आज उसने बस में कोई शरारत नहीं की।

पहला कालांश कक्षा टीचर का ही था। सबकी उपस्थिति के बाद शिक्षिका ने कक्षा कार्य के लिए कॉपी खोलने को कहा तो पंकज ने शिक्षिका से अपनी पेंसिल खो जाने की बात कही। मैडम ने पूरी कक्षा को अपने-अपने पेंसिल-बॉक्स चेक करने को कहा। पेंसिल नहीं मिली। पंकज और अधिक उदास हो गया। दो दिन बाद पंकज गृहकार्य करने बैठा तो माँ ने देखा, पंकज के पास लाल रंग की वही पेंसिल थी। उसने पूछा, ''अरे नटखट! पेंसिल खोने पर इतना शोर मचाया, पेंसिल मिल जाने पर बताया भी नहीं।'' पंकज उदास बना रहा।

''तुम पेंसिल मिलने पर खुश क्यों नहीं हो?'' माँ किसी आशंका से घबरा गई।

पंकज फिर रोने लगा। ''अरे-अरे इसमें रोने की क्या बात है?'' माँ ने पुचकारते हुए पूछा। पंकज ने सब कुछ सच-सच बता दिया, ''यह पेंसिल लाल रंग की कैमलिन की अवश्य है, पर यह मेरी पेंसिल नहीं है। यह भोजन अवकाश में कक्षा में गिरी हुई मिली है। पहले तो बहुत खुश हुआ, पर जब देखा तो पाया, यह मेरी नहीं है। अब मैं इसे किसी को नहीं दूँगा।''

माँ सारी बात समझ गई। उन्होंने उसे डांटा नहीं। बड़े प्यार से समझाया, ''देखो पंकज! जिस बच्चे की पेंसिल खोई होगी, वह भी तुम्हारी ही तरह परेशान होगा। उसका मन भी पढ़ने में नहीं लग रहा होगा। हो सकता है उसे घर से खूब डांट भी पड़ रही होगी अपनी लापरवाही के कारण।''

''पर माँ! मुझे उससे क्या? मैं भी तो परेशान हूँ। और फिर मैंने किसी की चुराई नहीं है। मुझे वहीं गिरी हुई मिली है।'' पंकज ने अपनी सफाई में बात कहीं। तो माँ ने उसे फिर समझाया- ''देखो बेटा! यह ठीक है कि यह पेंसिल तुम्हें गिरी हुई मिली है, लेकिन कक्षा कक्ष में। अवश्य यह तुम्हारी ही कक्षा के किसी बच्चे की है। तुम्हें इसे अपनी शिक्षिका को देना चाहिए था। वह पूरी कक्षा से पूछती और जिसकी होती, उसे मिल जाती।''

''पर मेरी तो किसी ने वापस नहीं की। मैं भी नहीं दूँगा।'' पंकज ने तर्क दिया।

''नहीं बेटा! तुम ऐसा नहीं करोगे। अच्छे बच्चे ऐसा नहीं करते। मैं तुम्हें आज वैसी ही नई पेंसिल दिला दूँगी। तुम कल जाते ही अपनी कक्षा शिक्षिका को यह पेंसिल सौंप दोगे।'' माँ ने आदेश के स्वर में कहा।

पंकज फिर सोच में पड़ गया और बोला– ''माँ! मेरी पेंसिल?''

''वह भी मिल जाएगी यदि हर बच्चा इसी प्रकार सच्चाई के साथ दूसरे की चीज वापस कर दे तो कोई दुखी नहीं होगा और उसे अपनी चीज वापस मिल जाएगी।''

माँ चिंतित हो उठी क्योंकि बचपन की ये आदतें ही स्वभाव बन जाती हैं। बचपन के अच्छे संस्कार ही उसे अच्छा आदमी बनाते हैं। उसे अपने पंकज पर विश्वास था।

पंकज ने दूसरे दिन पहले ही कालांश में पेंसिल अपनी कक्षा टीचर को दे दी। टीचर ने पूछा– ''यह पेंसिल किसकी है?''

तरुण खड़ा हो गया– ''मैडम! यह मेरी पेंसिल है।''

शिक्षिका ने उसे पेंसिल दे दी। तरुण बहुत खुश हुआ। उसे खुश देखकर पंकज को लगा, जैसे उसकी पेंसिल मिल गई हो। उसे आज अच्छा महसूस हुआ।

भोजनावकाश में तरुण ने पंकज को धन्यवाद दिया और बताया– ''मैं कल घर पर सारा दिन रोता रहा। पिताजी ने खूब डांटा। न कहीं खेलने गया और न रात को कुछ खाया। यह पेंसिल मेरी दीदी ने जन्मदिन पर बड़े प्यार से भेंट की थी। मैं इस पेंसिल को बहुत शुभ मानता हूँ।

''धन्यवाद पंकज! बहुत–बहुत धन्यवाद।'' कहते–कहते तरुण ने पंकज का हाथ चूम लिया।

पंकज आज बहुत खुश था। वह बड़ा हल्का अनुभव कर रहा था। अब वह अपनी पेंसिल का दुख भी भूल गया।

घर आकर उसने कक्षा की सारी बात माँ को बता दी। माँ बहुत प्रसन्न हुईं।

दो दिन बाद पंकज कक्षा कार्य कर रहा था, तो उसका रबड़ डेस्क से नीचे गिर गया। यह क्या? जैसे ही रबड़ खोजने के लिए उसने अपना डेस्क पीछे किया, उसे अपनी वही प्यारी–प्यारी लाल पेंसिल डेस्क में से नीचे गिरती दिखाई दी। उसने झटपट उसे उठा लिया और चूम लिया। उसने जोर से कहा– ''मिल गई, मिल गई, मेरी पेंसिल मिल गई।''

शिक्षिका ने देखा पंकज बहुत प्रसन्न था। शिक्षिका ने पूरी कक्षा को समझाया– ''देखो! ईश्वर अच्छा काम करने वाले का सदा भला करते हैं।'' आज का पाठ भी यही था कि दूसरे की वस्तु को मिट्टी के ढेले के समान समझो चाहे वह कितनी ही कीमती क्यों न हो। घर आते ही पंकज चपलता के साथ माँ से लिपट गया। आज वह बहुत प्रसन्न था। हाथ में पेंसिल छिपाये–छिपाये उसने माँ से कहा– ''माँ! बताओ तो मेरे हाथ में क्या है?''

''पेंसिल!''

''अरे आपको कैसे पता चला?''

''तुम्हारी खुशी देखकर।''

''हाँ माँ! मेरी पेंसिल मिल गई। वहीं, कक्षा में अपने ही डेस्क में छिपी हुई थी। माँ! तुमने अच्छी बात बताई थी। तुम बड़ी ही अच्छी हो।'' कहते–कहते पंकज फिर माँ से लिपट गया।

''तुम बड़े अच्छे हो पंकज! जो तुमने मेरी बात मान ली।''

''तुम अच्छी हो।''

''नहीं! तुम अच्छे हो।''

''नहीं तुम।'' पंकज मारे खुशी के चिल्ला रहा था।

इतने में पिताजी ने कहा– ''तुम दोनों ही बहुत अच्छे हो।'' और सब खिलखिला कर हँस पड़े।

– नई दिल्ली

जरा बताओ तो...

प्रस्तुति-संकेत गोस्वामी

1

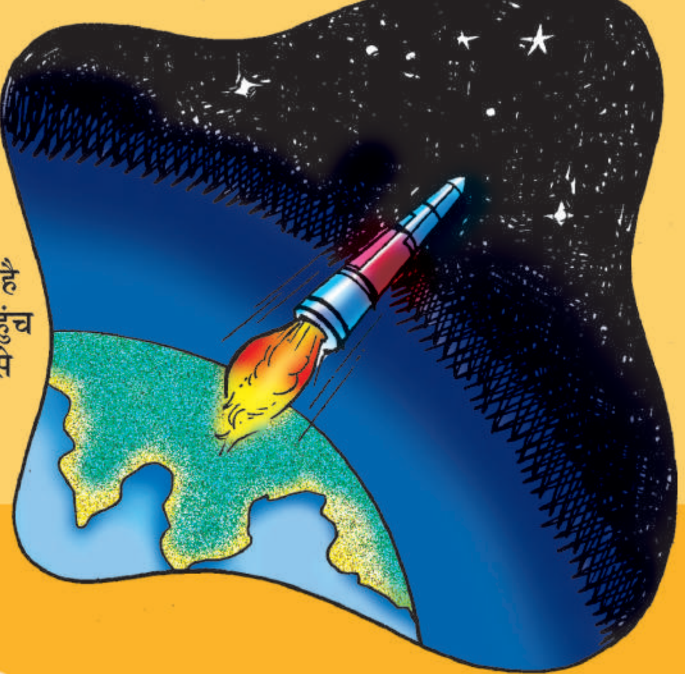

वह पृथ्वी का सबसे नजदीकी पड़ौसी है और अकेला वही है जहां पर मनुष्य पहुंच सका है. उसका गुरुत्वाकर्षण, पृथ्वी से 6 गुना कम है. वह क्या है?

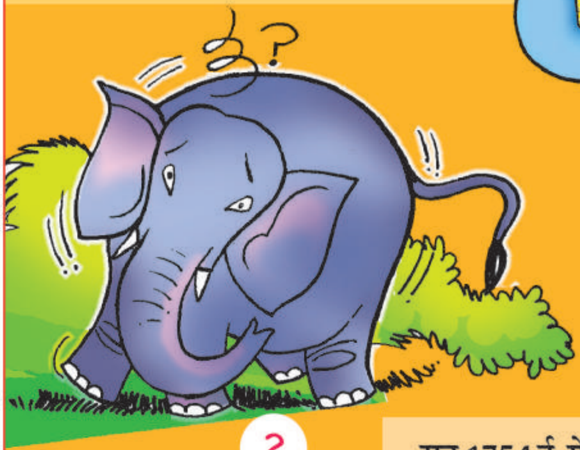

2

10 हाथियों के बराबर उनका आकार था. वे पृथ्वी पर 24 से 6.3 करोड़ वर्षों पहले तक राज करने वाली प्रजाति के जीवों की एक सबसे बड़े किस्म के थे. पूर्णतः शाकाहारी. वे कौन थे?

3

सन् 1754 ई. में उस वैज्ञानिक ने गरजते मेघों की ओर एक पतंग को उड़ाया और धागे को बिजली के डिटेक्टर से जोड़कर सिद्ध किया कि बिजली गिरते समय विद्युत का आवेश नीचे आता है. वह वैज्ञानिक कौन था?

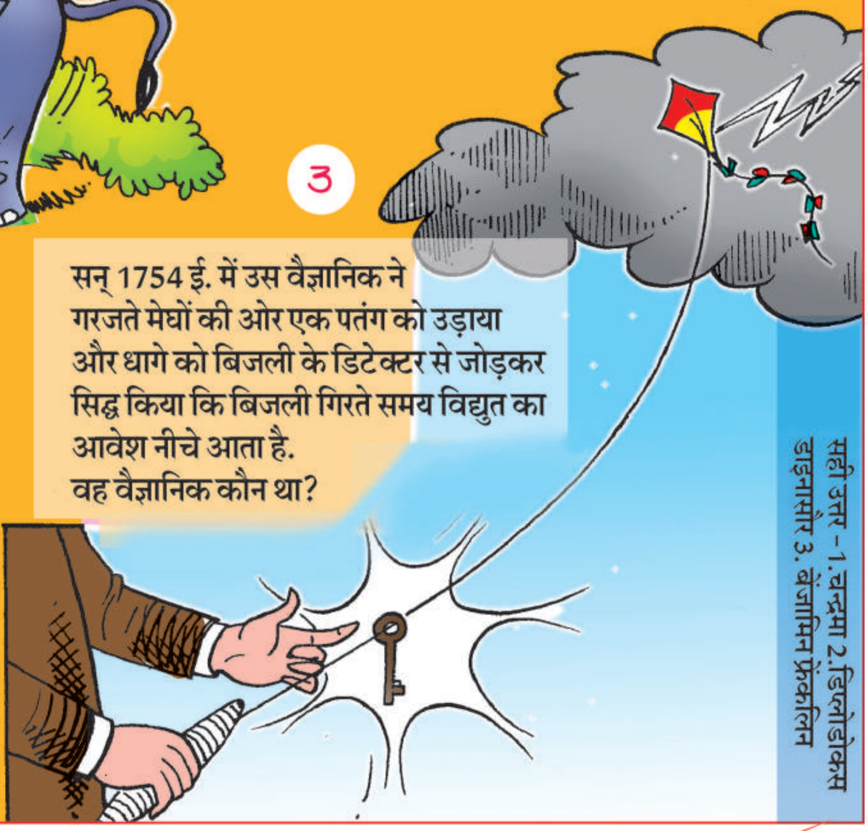

सही उत्तर -1.चन्द्रमा 2.डिप्लोडोकस डाइनासौर 3. बेंजामिन फ्रेंकलिन

शब्दों से खेलें और बनें बुद्धिमान

– शिखर चंद जैन

शब्दों और वर्तनी की पहेलियाँ सदियों से इंसानी दिमाग को चुनौती देती आ रही हैं। ये पहेलियाँ भाषा के विकास और मानसिक कसरत का भी एक विशेष भाग हैं। शब्द पहेलियों का इतिहास सभ्यता के साथ विकसित हुआ है। जहाँ प्राचीन काल में ये धार्मिक या दार्शनिक रहस्यों से जुड़ी थीं, वहीं आज ये शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य (अल्जाइमर और डिमेंशिया जैसे रोगों से बचाव) के लिए अनिवार्य मानी जाती हैं। ये पहेलियाँ हमें सिखाती हैं कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं।

क्रॉसवर्ड– क्रॉसवर्ड को हिंदी में 'शब्द–पहेली' या 'वर्ग–पहेली' कहा जाता है। क्रॉस वर्ड शब्दावली बढ़ाने और तर्कशक्ति को तेज करने का सबसे बेहतरीन तरीका माना जाता है। यह जटिल संकेतों को डिकोड करने की क्षमता बढ़ाता है और सामान्य ज्ञान व शब्दावली के विस्तार में सहायक है। इसमें एक वर्गाकार ग्रिड होता है जिसमें सफेद और काले खाने होते हैं। हल करने के संकेतों को दो श्रेणियों में बाँटा जाता है, बाएँ से दाएँ यानी एक्रॉस और डाउन यानी ऊपर से नीचे। आपको संकेतों को पढ़कर सही शब्द का अनुमान लगाना होता है और हर सफेद खाने में एक अक्षर भरना होता है। सभी शब्द एक–दूसरे को काटते हैं, इसलिए एक शब्द का सही अक्षर दूसरे शब्द को हल करने में सहायता करता है।

आधुनिक क्रॉसवर्ड का आविष्कार ब्रिटिश पत्रकार आर्थर वाईन ने किया था। पहली क्रॉसवर्ड पहेली २१ दिसम्बर, १९१३ को 'न्यूयॉर्क वर्ल्ड' अखबार में प्रकाशित हुई थी। इससे पहले प्राचीन रोमन काल में सैटर स्क्वेयर जैसे शब्द–वर्ग पाए जाते थे, जो क्रॉसवर्ड का ही एक आदिम रूप थे।

क्रॉसवर्ड में संकेतों को अलग–अलग तरीकों से पूछा जाता है–

१) सीधे या सामान्य सुराग– इसमें शब्द की सीधी परिभाषा दी जाती है। उदाहरण (हिंदी में)– ''मीठा फल जो आमतौर पर गर्मियों में आता है।'' (उत्तर–आम)।

२) गूढ़ या गुप्त सुराग– ये सुराग पहेली के रूप में होते हैं जिन्हें सुलझाने में थोड़ी दिमागी कसरत करनी पड़ती है।

३) संकेत– इसमें संकेत के साथ उत्तर के अक्षरों की संख्या भी कोष्टक में दी जाती है।

एनाग्राम–इसे हिंदी में वर्ण विपर्यास या अक्षर–क्रम परिवर्तन कहा जाता है। इसमें किसी शब्द के अक्षरों को आगे–पीछे करके एक नया सार्थक शब्द बनाना होता है, जैसे साइलेंट से लिसन। यह वर्तनी की बारीकियों को समझने और रचनात्मक सोच विकसित करने में सहायता करता है। एनाग्राम में आपको एक शब्द या वाक्यांश दिया जाता है। आपको उस शब्द के सभी अक्षरों का उपयोग करना होता है– न कोई अक्षर छोड़ना है और न ही नया जोड़ना है। उन अक्षरों को इस तरह व्यवस्थित करना है कि एक नया सार्थक शब्द बन जाए।

इसका इतिहास प्राचीन यूनान से जुड़ा है। कहा जाता है कि तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में कवि लाइकोफ्रोन ने राजाओं की प्रशंसा में एनाग्राम का उपयोग किया था। मध्यकाल में इसे धार्मिक और रहस्यमयी अर्थ निकालने के लिए उपयोग किया जाता था। एनाग्राम हिंदी वर्णमाला के अनुसार रकम से करम, जाहिर से हाजिर, नदी से दीन जैसे शब्दों के प्रयोग किए जा सकते हैं।

वर्ड सर्च–वर्ड सर्च एक लोकप्रिय शब्द पहेली है। इसे हिंदी में 'शब्द खोज' या 'शब्द पहेली' कहा जाता है। इसमें अक्षरों के एक अस्त–व्यस्त जाल में आपको नीचे दिए गए शब्दों की सूची को खोजना

होता है। इसमें शब्द क्षैतिज, ऊर्ध्वाधर या तिरछे छिपे हो सकते हैं। कभी–कभी शब्द पीछे की तरफ भी लिखे होते हैं।

वर्ड सर्च को १९६८ में ओक्लाहोमा के नॉर्मन ई. गिबट ने बनाया था। उन्होंने इसे स्थानीय समाचार–पत्र के लिए तैयार किया था ताकि बच्चों को शब्दों की पहचान करने में आसानी हो। यह बच्चों में 'पैटर्न रिकग्निशन' (आकृतियों की पहचान) और एकाग्रता बढ़ाने के लिए विद्यालयों में बहुत लोकप्रिय है। यह 'विजुअल स्कैनिंग' और पैटर्न पहचानने की क्षमता को तेज करता है, जो पढ़ने की गति बढ़ाने में सहायक है।

हिंदी वर्ड सर्च विभिन्न श्रेणियों में बनाए जाते हैं–

समानार्थी/पर्यायवाची शब्द–

इसमें समान अर्थ वाले शब्द खोजना होता है।

गिनती–अंकों के हिंदी नाम अक्षरों में खोजना।

दैनिक वस्तुएँ या स्थान–

इसमें घर, बाहर या प्रकृति से जुड़े नाम खोजने की चुनौती होती है।

स्पेलिंग बी (Spelling Bee)

स्पेलिंग बी एक लोकप्रिय शैक्षिक और वर्तनी प्रतियोगिता है, जिसे वर्तनी प्रतियोगिता भी कहा जाता है। इसमें प्रतिभागियों को बोले गए शब्दों की सही वर्तनी बतानी या लिखनी होती है। गलत स्पेलिंग बताने पर प्रतिभागी प्रतियोगिता से बाहर हो जाते हैं। इसमें संचालक एक शब्द बोलता है। प्रतिभागी शब्द की परिभाषा, उसका वाक्य में प्रयोग या उसकी उत्पत्ति पूछ सकता है। शब्द बोलने के बाद, आपको उसकी सही वर्तनी सुनानी होती है। एक बार अक्षर बोल देने के बाद, आप उसे सुधार नहीं सकते। गलत अक्षर बोलते ही आप प्रतियोगिता से बाहर हो जाते हैं।

स्पेलिंग बी की शुरुआत संयुक्त राज्य अमेरिका में १९वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुई थी। १९२५ में पहली बार 'नेशनल स्पेलिंग बी' प्रतियोगिता आयोजित की गई। बी शब्द का यहाँ अर्थ एक साथ मिलकर काम करना या सामूहिक कार्य है। यह पब्लिक स्पीकिंग में आत्मविश्वास बढ़ाने और शब्दों की व्युत्पत्ति को समझने में सहायता

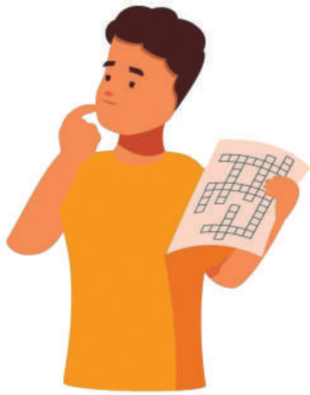

करती है। इसकी शुरुआत १९वीं सदी के अमेरिका में हुई। पहली 'नेशनल स्पेलिंग बी' प्रतियोगिता १९२५ में केंटकी में आयोजित की गई थी, जिसे फ्रैंक न्यूहाउसर ने ग्लेडियोलस शब्द की सही स्पेलिंग बताकर जीता था। भारतीय मूल के छात्रों ने हाल के वर्षों में इस प्रतियोगिता में वैश्विक स्तर पर अपनी धाक जमाई।

वर्डल (Wordle)– यह सीमित प्रयासों में सही शब्द ढूँढ़ने की रणनीति और अनुमान लगाने की क्षमता को विकसित करता है। आपको ५ अक्षरों वाले एक गुप्त शब्द को गेस करने के लिए ६ अवसर मिलते हैं। हरा रंग दिखाने का मतलब है कि अक्षर सही है और सही स्थान पर है। पीला दिखाना यानी अक्षर शब्द में है लेकिन गलत स्थान पर है। ग्रे कलर दिखाया जाए इसका अर्थ यह अक्षर शब्द में कहीं नहीं है। इसे सॉफ्टवेयर इंजीनियर जोश वर्डले २०२१ में अपनी पार्टनर के लिए बनाया था, जो बाद में वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हो गया।

वर्ड लेडर (Word Ladder)– वर्डल का कोई घोषित हिंदी नाम तो नहीं है इसे शब्दल कह सकते हैं। यह एक लोकप्रिय ऑनलाइन शब्द–अनुमान पहेली है। जहाँ आपको छिपे हुए ५ अक्षरों के देवनागरी शब्द का ६ प्रयासों में अनुमान होता है। इसमें आपको एक शुरुआती शब्द और एक लक्ष्य शब्द दिया जाता है। दोनों की लंबाई समान होनी

चाहिए। हर कदम पर आप केवल एक अक्षर बदल सकते हैं। अक्षर बदलने के बाद जो नया शब्द बने, उसका भी शब्दकोश में अर्थ होना चाहिए।

इस खेल का लक्ष्य है, न्यूनतम संभव चरणों में टारगेट वर्ड तक पहुँचना। (जैसे– LEAD-READ-REAR-BEAR)। इसका आविष्कार १८७७ में एलिस इन द वंडर वर्ल्ड के लेखक लुईस कैरोल ने किया था। उन्होंने इसे 'डबलेट्स' नाम दिया था। यह तार्किक सोच और शब्दों के बीच के सूक्ष्म अंतर को पहचानने की शक्ति बढ़ाता है। साथ ही यह प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल बढ़ाता है।

हैंगमैन (Hangman)– हैंगमैन एक लोकप्रिय शब्द–अनुमान लगाने वाला खेल है। चूँकि यह एक अँग्रेजी शब्द–पहेली है, इसलिए हिंदी में इसे आमतौर पर 'शब्द पहचानो खेल' या 'जल्लाद का खेल' कहा जाता है। इसमें एक खिलाड़ी गुप्त शब्द सोचता है और दूसरा खिलाड़ी सीमित अवसरों में अक्षरों का अनुमान लगाकर उसे खोजता है।

हैंगमैन गेम खेलने की प्रक्रिया और नियम–

१) गुप्त शब्द और रिक्त स्थान– मेजबान एक गुप्त शब्द चुनता है (उदाहरण के लिए–H-A-N-G-M-A-N) दूसरे खिलाड़ी को यह नहीं पता होता कि शब्द क्या है। मेजबान शब्द के प्रत्येक अक्षर के लिए डैश (_) बना देता है। (_______\) यहाँ कुल ७ अक्षर हैं।)

२) अक्षरों का अनुमान– खिलाड़ी एक–एक करके अक्षरों का अनुमान लगाते हैं। यदि अनुमान सही होता है, तो मेजबान डैश के स्थान पर सही अक्षर भर देता है। गलत अनुमान लगाने पर, मेजबान फाँसी पर लटके हुए आदमी के चित्र का एक–एक हिस्सा बनाता जाता है। (**उदाहरण के लिए**– सिर, धड़, हाथ पैर आदि)।

३) खेल का अंत– यदि खिलाड़ी पूरे शब्द का सही अनुमान लगा लेता है तो जीत जाता है। यदि चित्र पूरा हो जाता है और खिलाड़ी सही शब्द का अनुमान नहीं लगा पाता है तो हार जाता है।

यह एक पारंपरिक 'कलम और कागज' का खेल है जिसका सटीक इतिहास अस्पष्ट है, लेकिन इसका उल्लेख १८९४ में एलिस गोमे की पुस्तक 'ट्रेडिशनल गेम्स' में मिलता है। यह वर्तनी की गलतियों को सुधारने और अक्षरों की आवृत्ति को समझने का एक खेल–खेल वाला तरीका है।

भारतीय मूल के मेधावी छात्रों का दबदबा

हाल ही मई २०२६ में अमरीका में रहने वाले भारतीय मूल के १४ वर्षीय श्रेय पारिख के स्क्रिप्स नेशनल स्पेलिंग बी के फाइनल में 'स्पेल–ऑफ' जीतकर इतिहास रच दिया। ९० सेकंड में ३२ शब्द सही बताकर श्रेय ने विजय प्राप्त की।

अंतिम मुकाबले में श्रेय का सामना न्यू जर्सी के छात्र ईशान गुप्ता से हुआ। दोनों प्रतिभागियों को समान सूची से शब्द दिए गए और ९०–९० सेकंड का समय मिला। श्रेय ने 'ब्रोमोक्रिप्टीन' शब्द की सही वर्तनी बताकर निर्णायक बढ़त प्राप्त की।

ईशान २५ शब्दों की सही वर्तनी ही बता सके। श्रेय को विजेता बनने पर ५० हजार डॉलर, पदक और 'स्क्रिप्स कप' प्रदान किया गया।

इसके अलावा उन्हें शब्दकोश प्रकाशन संस्था की ओर से २,५०० डॉलर, हवाई यात्रा क्रेडिट और पुस्तकें भी पुरस्कार में मिलीं। श्रेय ने पिछले वर्ष बना रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। वाशिंगटन स्थित कॉन्स्टिट्यूशन हॉल में आयोजित इस प्रतियोगिता में २४७ प्रतिभागियों ने भाग लिया। अंतिम नौ प्रतिभागियों में पाँच भारतीय मूल के थे। वर्ष १९८५ में बालू नटराजन इस प्रतियोगिता को जीतने वाले पहले भारतीय मूल के छात्र बने थे।

– कोलकाता (बंगाल)

अनूठे सच

एशिया की सर्वाधिक ऊंची 109 चोटियों में से 96 तो हिमालय की पहाड़ियों में है.

केवल 9 महीनों के भीतर एक मानव-शिशु में एक से बढ़ते हुए 200 करोड़ तक कोशिकाएं बन जाती है.

जापानी कभी हाथ नहीं मिलाते वे आपस में मिलते और बिछड़ते वक्त कमान की तरह झुककर अभिवादन प्रकट करते है.

पेंगुइन केवल अंटार्कटिका (दक्षिण ध्रुव) के ठंडे स्थानों में पाए जाते हैं, आर्कटिक (उत्तरी ध्रुव) में तो एक भी नहीं.

फलों का फल

– डॉ. सेवाराम नन्दवाल

जैसे ही अध्यापिका वंदना कक्षा में प्रविष्ट हुईं समस्त विद्यार्थियों ने शालीनतापूर्वक खड़े होकर एक स्वर में उनका अभिवादन कर दिया। प्रत्युत्तर देते वंदना ने सबको बैठने का संकेत किया। सामान्य ज्ञान का कालांश था। सफल ने पूछ लिया– ''दीदी! आज किसके बारे में अध्ययन करेंगे?'' वंदना ने मुस्कुराते हुए कहा– ''तुम्हारे नाम के आगे लगे 'स' उपसर्ग को हटाओ तो क्या बचता है?'' अधिकांश बच्चे चिल्ला पड़े फल.. फल... फल....।''

''बस तो आज फलों पर चर्चा करेंगे। पहले यह जानेंगे कि तुम्हें कौनसा फल पसंद है?'' बच्चे शुरू हो गए। अपने पसंदीदा फलों के नाम गिनाते बच्चों को टोंकते हुए शिक्षिका बोलीं– ''मुझे पता है सबकी पसंद भिन्न होती है। इसलिए ऐसा करो। वे बच्चे हाथ खड़ा करें जिन्हें केला पसंद है?'' दस बच्चों ने हाथ खड़े कर दिए। ''अब वे बच्चे हाथ ऊपर करें जिन्हें आम पसंद हैं?'' यहाँ भी दस बच्चों ने हाथ खड़े कर दिए।

''अब वे विद्यार्थी अपनी पसंद का बताएँ जिन्हें संतरा पसंद है?'' वंदना ने पूछा। पाँच बच्चों ने हाथ खड़े किए। ''अब अमरूद पसंद वाले बच्चे?'' उन्होंने पूछा। फिर से पाँच विद्यार्थियों ने हाथ खड़े किए। ''अरे वाह! यहाँ भी अमरूद और संतरा बराबरी से आमने सामने हैं।'' वंदना दीदी बोलीं।

दो बच्चों के हाथ अभी भी नीचे लटके हुए थे। ''क्यों भाई! फलों से ऐसी क्या नाराजी है। अपनी पसंद प्रकट करो।'' शिक्षिका ने प्रोत्साहित किया। दक्ष ने कहा– ''दीदी मुझे अँगूर पसंद है।'' ''और मुझे बब्बू गोशा।'' हनी ने तत्परता से कहा।

कुछ बच्चे इस नाम को सुनकर हँस पड़े। ''यह कौनसा फल होता है दीदी?'' आवेग ने पूछा। ''यह नाशपाती की प्रजाति है।'' वंदना दीदी ने बताया।

''विजेता कौनसा फल घोषित हुआ, केला या आम?'' अंजीरा ने पूछा। ''दोनों के मत बराबर हैं। मैं अपना मत आम को देकर उसे विजेता बनाती हूँ। वैसे भी आम को फलों का राजा कहा जाता है।'' वंदना दीदी ने स्पष्ट किया।

''दीदी! फलों का राजा सेब को मानना चाहिए क्योंकि उसके बारे में प्रचलित है– एन एपल ए डे, कीप्स डॉक्टर अवे याने प्रतिदिन एक सेब का सेवन हमें डॉक्टरों से बचाता है।'' भव्या बोली। ''ऐसा तो मौसंबी के बारे में भी कहा जाता है। बीमारी में उसे खाने की डॉक्टर सलाह देते हैं।'' प्रांजलि ने कहा।

''अच्छा बता सकते हो, दुनिया का सबसे मीठा याने शक्कर से अधिक मीठा फल कौनसा होता है?'' वंदना ने पूछा। ''सीताफल'' जमुना बोली। ''चीकू''– मानस ने कहा। ''यह चीकू के पक्ष में इसलिए बोल रहा है क्योंकि इसके घर का नाम चीकू है। सब इसे चीकू बोलते हैं'' दक्ष ने पोल खोली। कुछ बच्चे खिलखिला पड़े।

''गलत उत्तर। संसार के सबसे मीठे फल की मान्यता मिली है 'अंजीर' को।'' वंदना दीदी ने बताया। भव्या ने अपने पास बैठी लड़की को सलाह दी। ''अंजीरा! तू अपना नाम बदलकर अंजीर रख ले।'' ''दीदी! खजूर भी बहुत मीठा होता है।'' कुश ने कहा। ''लगभग सभी फल मिठास लिए होते हैं, कोई कम कोई अधिक।'' वंदना ने आश्वस्त किया।

''दीदी! कौनसा फल सबसे अधिक शक्तिवर्धक माना जाता है?'' हनी ने पूछा। ''क्यों उसे खाकर क्या मोटी बनना चाहती हो?'' उसके पतले शरीर पर प्रांजलि ने कटाक्ष किया। ''आम सबसे मीठा होता है।'' अनेक बच्चे एक साथ बोल पड़े। ''जो फल राजा के नाम से विख्यात हो जरूरी नहीं वहीं सबसे अधिक ताकतवर, मीठा हो।'' वंदना

ने खंडन किया। ''फिर दीदी ?'' सफल ने पूछा।

''सबसे शक्तिवर्द्धक फल माना जाता है कीवी को।'' वंदना ने बताया। ''अच्छा! इसीलिए उसे फलों की दूसरी रानी माना जाता है।'' कुश ने बताया।

''अच्छा बता सकते हो। सबसे अधिक आयरन यानि लौह तत्व किस फल में पाया जाता है?'' दीदी ने पूछा। किसी ने केला, किसी ने अमरूद, किसी ने सेब, किसी ने अनार किसी ने अनानास.... कहकर तुक्का मारा। वंदना दीदी ने बताया।'' वैसे तो लौह तत्व की मात्रा, कम अधिक अनेक फलों में होती है मगर सबसे अधिक आयरन 'जामुन' में पाया जाता है। ''देखने में छोटा पर फायदे में बड़ा।'' आवेग ने प्रशंसा की।

''अब बारी है सर्वाधिक लोकप्रिय या सर्वाधिक खाए जाने वाले फल को जानने की।'' वंदना दीदी बोली। ''केला... केला... केला... ध्वनिमत से शब्द गूँज उठा। ''हाँ, यहाँ तुम लोग सही सिद्ध हुए। लोकप्रियता की प्रथम पायदान पर बनाना जी ही हैं।'' वंदना दीदी ने मुस्कुराते हुए घोषणा की। ''केला राम जिंदाबाद।'' नारा गूँज उठा।

''देखो बच्चो! हमने फलराज के सिंहासन पर 'आम' को बैठा दिया। अब फलों की रानी भी खोजना पड़ेगी।'' वंदना दीदी बोली। विद्यार्थीगण अनुमान लगाने में व्यस्त हो गए, मगर वे फिर असफल सिद्ध हुए। आखिरकार दीदी को ही बताना पड़ा– ''फलों की रानी के सिंहासन पर विराजमान हैं। 'मैंगोस्टीन' फल।'' ''इसका नाम हम पहली बार सुन रहे हैं दीदी।'' मौसमी बोली। ''क्या यह हमारे देश में नहीं

होता?'' जमुना ने पूछा। ''इसका स्वाद कैसा होता होगा?'' प्रांजलि ने जानना चाहा। ''मुख्यत: यह फल पाया जाता है। दक्षिणी पूर्व एशिया में, हमारे देश में इसका उत्पादन केरल में होता है।'' वंदना ने बताया। ''दीदी! इसका स्वाद?'' हनी ने स्मरण दिलाया। ''बैंगनी रंग का यह फल स्वाद में खट्टा मीठा, कुछ लीची-सा तथा बहुत स्वादिष्ट होता है मगर महंगा भी बहुत मिलता है।'' दीदी ने बताया।

''अब किसकी बारी है?'' श्रीश ने पूछा। ''अब तुम्हें उन फलों के नाम गिनाने हैं जिन्हें हम विस्मृत करते जा रहे हैं या तो बाजार से ओझल होते जा रहे हैं।'' वंदना ने कहा। विद्यार्थीगण सोच में पड़ गए। कई फलों को उन्होंने देखा भी न नहीं केवल नाम भर सुना था। दीदी बोली- ''मैं बताती हूँ। ये फल विस्मृति की कगार पर सा उपेक्षित फल हैं जैसे शहतूत, फालसा, करोंदा, बैर, बेल, आडू....।'' ''जी दीदी! हम इन्हें जानते नहीं।'' मानस ने स्वीकारा।

''अब एक मजेदार सवाल। वे बच्चे खड़े हों जिनके नाम किसी फल के नाम पर हैं। या जिनके लाड़-प्यार का नाम किसी फल से संबंधित है या जिन्हें फल के नाम से पुकारा या चिढ़ाया जाता है?'' दीदी ने जानना चाहा। सकुचाते हुए विद्यार्थीगण स्वयं की पोल खोलने लगे। अंजीरा ने बताया कि उसे अंजीर के नाम से, मानस ने बताया कि उसे चीकू नाम से, मौसमी ने बताया कि उसे मौसंबी के नाम से, जमुना ने बताया कि उसे जामुन नाम से, सिया ने बताया उसे सीताफल के नाम से पुकारा जाता है।

''अब बातें करते हैं वीआयपी फलों की। राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी की हालिया प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार इन ५ वीआयपी फलों ने हमारे ५४ प्रतिशत बाजार पर कब्जा जमा रखा है।'' दीदी ने कहना चाहा तो भव्या बीच में टपक पड़ी- ''कौनसे मैडम?'' ''वे फल हैं, २० प्रतिशत कब्जे के हिसाब से केले ने, ११ प्रतिशत के हिसाब से सेब ने, १० प्रतिशत के हिसाब से संतरा ने। ७ प्रतिशत के हिसाब से अँगूर और ६ प्रतिशत के हिसाब से आम ने हमारे बाजार पर अधिपत्य जमा रखा है।'' वंदना दीदी ने बताया... ''जी दीदी! ये फल बाजार में बहुतायात से दिखाई देते हैं।'' सिया ने कहा।

''फलों की चर्चा हमने कर ली, अब यह बताओ इन फलों का हमारे जीवन में क्या महत्व है? यदि हमारे जीवन में फल न होते तो क्या होता?'' वंदना ने पूछा। ''हम फल खाने से वंचित रह जाते और क्या?'' सफल मुस्कुराते हुए बोला। ''वास्तव में ईश्वर या प्रकृति की अनुपम सौगात हैं ये फल। खाद्य पदार्थ, नाज अनाज के स्वाद परिवर्तन के अच्छे विकल्प हैं फल। सृष्टि के आरंभ याने आदिकाल में सदियों तक फल ही हमारे खाद्य रहे।'' मैडम ने बताया। ''ऐसा लगता है आज सारे फलों का स्वाद एक साथ चख लिया।'' प्रांजलि ने चटखारे लेते कहा।

''अरे! तुम एक महत्वपूर्ण फल का नाम लेना तो भूल ही गए।'' कहते हुए वंदना दीदी ने सब बच्चों के कान खड़े कर दिए। भव्या ने पूछ लिया- ''कौनसा फल?'' ''ऐसा फलों का फल जो हम सबके बिलकुल निकट है... .संतरे से अधिक खट्टा-मीठा। किन्तु इसका स्वाद सबके लिए भिन्न होता है।'' वंदना ने कहा। ''ऐसा कौनसा फल हो सकता है जिसका स्वाद सबके लिए अलग-अलग हो?'' कहते हुए कुश सोच में पड़ गया। ''वह फल, वर्ष में केवल एक बार प्राय: फरवरी-मार्च के महीने में उत्पन्न होता है, वह है 'परीक्षा फल' दीदी ने बताया तो सारे विद्यार्थी खिलखिला पड़े और तालियाँ बजाकर इस सत्य, तथ्य का अनुमोदन करने लगे। इसके साथ ही छुट्टी की घंटी ने भी बजकर अपना समर्थन व्यक्त कर दिया।

- इन्दौर (म. प्र.)

मान गए केशव बाबू

– डॉ. अरविन्द दुबे

दो बरस के केशव बाबू जमीन पर बैठे अपने खिलौने से खेल रहे थे। खेलते-खेलते वे खिलौना जमीन पर पटकते फिर उसे मुँह में डाल लेते।

एक क्षण को वे जैसे खिलौने में लगी हुई मिट्टी का स्वाद लेते और खिलखिला कर हँसने लगते।

तभी अम्मा वहाँ आ गई। केशव को मुँह में गंदा खिलौना डालते हुए देख कहा-

''बेटा नहीं, खिलौना गंदा खिलौना मुँह में नहीं डालते। इसमें छीछी लगी होती है।''

उन्होंने खिलौना केशव के हाथ से ले लिया और उसे पानी से साफ करके फिर उसे केशव को पकड़ा दिया। केशव बाबू ने फिर खिलौना जमीन पर पटका और मुँह में डाल दिया।

माँ ने फिर कहा- ''नहीं बेटा! उसमें छीछी लगी है मुँह में नहीं डालते।''

पर केशव बाबू नहीं माने। उन्हें बार-बार ऐसा करते देख माँ ने खिलौना उनके हाथ से लेकर दूर फेंक दिया। अब तो केशव बाबू लगे रोने। सब लोगों ने उन्हें चुप कराया लेकिन केशव बाबू रोते ही रहे।

तभी दादाजी अंदर आए। उनके हाथ में डफली बजाने वाला एक बड़ा-सा जोकर था। कुसी पर बैठे केशव खिलौने के लिए लपके।

दादाजी ने वह खिलौना केशव बाबू के सामने जमीन पर रख कर चाबी भरी। खिलौने वाला जोकर नाच कर ढपली बजाने लगा। केशव बाबू खिलखिला कर हँसने लगे।

– लखनऊ
(उ. प्र.)

विघ्न विनाशक – श्री गणेश

– शिवचरण चौहान

देवों में देव–गणेश। सभी का मंगल करने वाले। प्रथम पूज्य। देवाधिदेव भगवान शिव के सुपुत्र। पार्वती जैसी जन कल्याण करने वाली माँ। ऐसे गणेश भगवान हिन्दू, जैन, शैव, वैष्णव सभी के पूज्य। हिन्दू मंदिरों में सबसे पहले गणेश की ही मूर्ति स्थापित की जाती है। हर एक मंगल कार्य में गणेश का सबसे पहले पूजन किया जाता है। उनकी पत्नियाँ ऋद्धि–सिद्धि हैं तथा दो पुत्र शुभ और लाभ कल्याण करते हैं। वैसे तो भाद्रपद (भादौ) मास के शुक्ल पक्ष में महाराष्ट्र समेत पूरे भारत में गणेशोत्सव मनाया जाता है।

गणेशोत्सव के अतिरिक्त प्रत्येक पक्ष की चतुर्थी तिथि को गणेश चतुर्थी के रूप में मनाया जाता है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष माघ कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को गणेश संकट चतुर्थी के रूप में मनाई जाती है। ऐसी मान्यता है कि इस तिथि को विधिवत गणेश पूजन से सारे संकट विघ्नविनाशक गणेश जी दूर कर देते हैं। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान आदि में गणेश संकट चतुर्थी मनाई जाती है।

भारतीय चित्रकला व मूर्तिकला में गणेश के चित्र व प्रतिमाएँ दो, तीन, चार व पाँच सिर वाली पाई जाती हैं। इसी प्रकार उनके एक से लेकर तीन दाँत पाए जाते हैं। किन्तु गणेश का हाथी के सिर वाला एकदन्त वाला स्वरूप ही ज्यादा लोकप्रिय है। वैसे तो गणेश जी की दो आँखें ही पाई जाती हैं किन्तु तान्त्रिक तीन नेत्रों वाले गजवदन की पूजा करते हैं। गणेश प्रतिमाएँ सामान्यत: चार हाथ वाली होती हैं किन्तु कहीं–कहीं आठ व सोलह हाथ वाली भी मूर्तियाँ स्थापित हैं। तीन मुखी मूर्तियाँ जापान में तथा चतुर्मुखी मूर्तियाँ कम्बोडिया में पाई जाती हैं। प्रत्येक मास की चतुर्थी को मनाई जाने वाली गणेश चतुर्थी पर पुरुष व महिलाएँ उपवास व्रत रखते हैं तथा गणेशजी का पूजन करते हैं। महिलाएँ दिनभर व्रत कर शाम को चन्द्रमा का दर्शन कर व्रत खोलती हैं। तांत्रिक रात में गणेश मंदिरों में गणेशोपासना करते हैं।

गणेश शब्द का अर्थ है, गणों को स्वामी। इन्हें एक दन्त, लम्बोदर, गजवदन, विघ्नविनाशक, गजानन, विनायक, परशुपाणि, द्वैमातुर, आखुम आदि नामों से जाना जाता है। हाथों में फरसा, पाश, लड्डू, फूल आदि धारण किए गणेश, चूहे पर सवार रहते हैं। ब्रहमावर्त–पुराण, स्कंद पुराण, पद्मपुराण, गणेश पुराण, शिव पुराण आदि अधिकांश पुराणों में भगवान गणेश की उत्पत्ति व पूजन की कथाएँ आती हैं। कहते हैं पार्वती के उबटन से भगवान गणेश की उत्पत्ति हुई।

पिता शिव के कहीं से घर आने पर न पहचानने और घर में प्रवेश से रोकने के कारण क्रोधित भगवान शंकर ने गणेश की गर्दन काट दी। पार्वती की प्रार्थना पर एक नवजात हाथी के बच्चे का सिर काटकर गणेश जी को लगाकर जीवित कर दिया भोले–शंकर ने। कहीं–कहीं कथा आती है कि शनि देव के कोप से

गणेश जी का मस्तक गल गया था। कई तरह की कथाएँ हैं।

कैथा, लड्डुओं का भोग लगाकर गणेश जी की पूजा की जाती है। कुछ लोग गणेश पुराण भी पढ़ते हैं। गणेश जी के चित्र, प्रतिमा पर गंगाजल चढ़ाकर चंदन, धूप, दीप नैवेद्य से पूजन का विधान है। अनेक मुस्लिम कवियों ने भी गणेशजी की स्तुतियाँ लिखी हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने तो–

जो सुमिरत सिध होय, गननायक करिवर बदन।
करउँ अनुग्रह सोई बुद्धिरासि शुभ गुनसदन।

सोरठे से ही गणेश जी की स्तुति कर रामचरित मानस की शुरुआत की है। संस्कृत कवियों ने–

'गजाननं भूतगणादिसेवितम्,
कपित्थजम्बूफलचारू भक्षणम्।।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्,
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।

जैसे श्लोकों से गणेश जी की स्तुति की है। रामलीलाओं, रासलीलाओं, नाटकों, नौटंकियों आदि कार्यक्रमों की शुरुआत ही गणेश वंदना से की जाती है– **विघ्न हरण गजराज गजानन कर दो मेरी सहाय**। तथा गोस्वामी तुलसीदास जी रचित– **गाइए गणपति जगवन्दन...** गीत आज भी जन–जन में रचे–बसे हैं।

''जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।''

सूरदास जी द्वारा रची आरती तो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक गणेश–पूजन में गाई जाती है। वह सदा भक्तों को कल्याण ही करते हैं। दीवाली में लक्ष्मी के साथ तो बसंत पंचमी में सरस्वती के साथ गणेश पूजन होता है। आज गणेश जन–जन के आराध्य हैं।

– कानपुर (उ. प्र.)

कविता

बारिश आई

– आर्यन अमर कुशवाहा

छम छम करती बारिश आई
झम झम झम पानी बरसाई

भीगें मिलकर बच्चे सारे
खोल के मस्ती भरे पिटारे

गरज रहे हैं बादल काले
उड़ते हैं होकर मतवाले

कागज की हम नाव बनाएँ
पानी पर उसको तैराएँ

बहकर दूर तलक जाएगी
सैर सपाटा कर आएगी

– अंधेरी (वेस्ट) (महाराष्ट्र)

लगन से मिली जीत

– रजनीकांत शुक्ल

छत्तीसगढ़ राज्य में कोंडागाँव नाम का एक जिला है। जिसमें फरसगाँव विकासखण्ड के अंतर्गत एक नक्सल प्रभावित ग्राम हिर्री है। जिसमें वर्ष २०११ की एक जनवरी को योगिता का जन्म हुआ था। जब वह मात्र चार वर्ष की थी तभी वर्ष २०१५ में उनके पिता मायाराम मंडावी और माता सुकमती मंडावी का अकस्मात निधन हो गया।

बचपन में ही हुई माता–पिता की इस दुखद मृत्यु ने उनके जीवन को पूरी तरह बदल दिया। वे अपने चाचा–चाची के संरक्षण में रहने लगीं। देखरेख और संरक्षण की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए २५ जनवरी २०२१ को जिला प्रशासन द्वारा उन्हें छत्तीसगढ़ राज्य बाल कल्याण परिषद् के बालिका बालगृह, कोंडागाँव में प्रवेश दिला दिया।

इस तरह गरीबी अकेलेपन और संघर्ष से भरा बचपन रहा योगिता मंडावी का। देखभाल और संरक्षण के अभाव में योगिता का जीवन पता नहीं क्या रूप लेता था। अगर उन्हें जिला प्रशासन का यह सहारा न मिलता। उनकी इस निराश्रित स्थिति को देखकर ही बालिका बालगृह कोंडागाँव में उन्हें भर्ती कराया गया था।

माओवादी हिंसा से बस्तर संभाग को मुक्त करने के अभियान में जुटी आइटीबीपी ने वर्ष २०१६ में कोंडागाँव में जूडो और तीरंदाजी का प्रशिक्षण केंद्र शुरू किया था।

ग्रामीण पृष्ठभूमि से आई योगिता मंडावी को बालिका बालगृह में रहते हुए न केवल खाने और रहने की सुविधा मिली बल्कि आईटीबीपी की ४१वीं बटालियन द्वारा जूडो के प्रशिक्षण का सहारा भी प्रदान किया गया। इसे पाकर मानो जैसे योगिता के जीवन जीने की दिशा ही बदल गई। उस समय योगिता की आयु मात्र दस वर्ष थी जब योगिता ने जूडो के खेल को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। पूरे मन और लगन से लिए गए प्रशिक्षण का परिणाम निकला कि उनकी असाधारण खेल प्रतिभा निखरती चली गई।

इस तरह योगिता मंडावी ने कम आयु में ही जूडो खेल में अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए मात्र तेरह वर्ष की आयु में राज्य की श्रेष्ठ जूडो खिलाड़ी का दर्जा प्राप्त किया। इसके बाद उन्होंने राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में लगातार पदक अर्जित कर अपनी निरंतर प्रगति और उपलब्धियों को कायम रखा।

योगिता ने अपनी लगन से पहले ही वर्ष में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में पदक जीता। वर्ष २०२४ में दुर्ग में राज्य स्तरीय शालेय जूडो में उन्होंने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। खेलो इंडिया क्षेत्रीय जूडो प्रतियोगिता २०२४ नासिक में रजत पदक तथा खेलो इंडिया राष्ट्रीय जूडो प्रतियोगिता २०२४ केरल में भी रजत पदक, वर्ष २०२५ में राज्य स्तरीय ओपन जूडो एवं राज्य स्तरीय शालेय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक, राष्ट्रीय ओपन जूडो प्रतियोगिता २०२५ हैदराबाद में कांस्य पदक जीतकर उन्होंने जिले और प्रदेश का नाम रोशन किया।

मात्र चौदह वर्ष की आयु में योगिता मंडावी एक राष्ट्रीय स्तर की जूडो खिलाड़ी हो गईं और स्पोर्टस अथॉरिटी ऑफ इंडिया के नेशनल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, भोपाल में उच्चस्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त

करने लगीं। योगिता की यह सफलता न केवल जिले बल्कि पूरे प्रदेश के बच्चों के लिए प्रेरणास्रोत बन गई है।

खेलों के प्रतियोगिता के जुनून और समर्पण ने उन्हें जूडो खेल में अनेक पुरस्कार दिलाए। उन्होंने २०२३-२०२५ के दौरान राष्ट्रीय स्वर्णपदक, राज्य और जिला स्वर्ण पदक सहित अनेक पदक जीते। योगिता ने यह साबित कर दिया कि मजबूत इरादों के आगे कैसे भी कठिन हालात हों उन्हें झुकना पड़ता है।

जूडो में उनके लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए उन्हें प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार के लिए चुन लिया गया।

छत्तीसगढ़ सरकार ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए योगिता को बधाई दी और उनकी प्रतिभा को निखारने में महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रयासों की सराहना की।

राष्ट्रीय बाल पुरस्कार प्रतिवर्ष ५ से १८ वर्ष की आयु के उन बच्चों को दिया जाता है जो खेल, वीरता, विज्ञान और सामाजिक सेवा सहित विभिन्न विषयों में देश के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस उपलब्ध पर कहा कि योगिता की सफलता केवल व्यक्तिगत जीत नहीं है, बल्कि यह छत्तीसगढ़ की बेटियाँ के सपनों की जीत है।

नक्सल प्रभावित क्षेत्र से निकलकर राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाना आसान नहीं होता, लेकिन योगिता ने कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत और अनुशासन के बल पर यह मुकाम हासिल किया है। उनकी यह सफलता युवाओं और खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बनी।

योगिता ने साबित किया है कि संसाधनों की सीमाएँ नहीं, बल्कि सपनों के प्रति लगन और परिश्रम ही सफलता का वास्तविक आधार है।

जिला कलेक्टर नुपूर राशि पन्ना ने योगिता

मंडावी की सराहना करते हुए कहा कि विपरीत परिस्थितियों में इतनी कम आयु में यह बड़ा सम्मान प्राप्त करना उल्लेखनीय है।

कोंडागांव जिला कार्यालय में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा इस अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान नई दिल्ली में आयोजित प्रधानमंत्री बाल पुरस्कार समारोह का सीधा प्रसारण वहाँ दिखाया गया। इसमें जिले की बालिका योगिता मंडावी को देश के अन्य चुने गए बच्चों के साथ जूडो खेल के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२५ से वीर बाल दिवस २६ दिसम्बर २०२५ के अवसर पर सम्मानित किया गया था।

महज चौदह वर्ष की आयु में योगिता मंडावी राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी बन चुकी हैं और पूरे देश में उन्होंने अपनी पहचान बना ली है।

नन्हे मित्रो!

भले परिस्थिति हो कैसी भी, मत हिम्मत हारो।
लगन लगा धुन एक चल पड़ो, खुशियाँ पुकारो।
अंधकार से डरो नहीं तुम, दीपक उजियारो,
हर मंजिल पा सकते लेकिन डटे रहो यारो।।

– नई दिल्ली

ईमानदारी का इनाम

– मृदुल त्यागी

रवि पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। वह पढ़ाई में अच्छा था और उसके माता-पिता उसे हमेशा सच बोलने और ईमानदार रहने की सीख देते थे। एक दिन शाला की छुट्टी हो चुकी थी। सब बसें जा चुकी थी। रवि दरवाजे पर खड़ा होकर अपने नौकर भोला की प्रतीक्षा कर रहा था। वह उसे प्रतिदिन लेने आता था। जैसे ही रवि को भोला आता दिखा वह दरवाजे के बाहर आया कुछ ही दूर पर उसे एक बटुआ पड़ा दिखाई दिया।

रवि ने उसे उठाकर देखा, उसमें बहुत सारे रुपए और एक पहचान पत्र था। पहचान पत्र पर एक बुजुर्ग व्यक्ति का नाम और पता लिखा था। भोला ने रवि से कहा– ''रवि! यह तुमने हाथ में क्या ले रखा है, मुझे दिखाओ और मुझे दो।''

रवि ने कहा– ''नहीं भोला काका! यह मैं अपनी माँ को दूँगा।''

''अच्छा ठीक है, अब फटाफट स्कूटर पर बैठो और चलो घर।''

रवि ने घर पहुँचते ही वह बटुआ अपनी माँ को दिया। तब माँ ने रवि से पूछा– ''यह बटुआ तुझे कहाँ से मिला?''

रवि बोला– ''माँ! छुट्टी के बाद जब मैं दरवाजे पर खड़े होकर भोला काका की प्रतीक्षा कर रहा था तब यह मुझे सड़क पर पड़ा मिला। भोला काका मुझसे माँग रहे थे पर मैंने उन्हें नहीं दिया।''

''अच्छा ठीक किया, अब फटाफट खाना खा लो फिर इस बटुए के मालिक को ढूँढ़ कर इसको पहुँचा देते हैं।'' माँ ने कहा।

खाना खाने के बाद रवि ने अपनी माँ से कहा– ''माँ! चलो यह बटुआ दे आते हैं।'' ठीक है बेटा चलते हैं।'' और कुछ देर में रवि अपनी माँ को लेकर सीधे उस पते पर पहुँचा जो पता पहचान पत्र में लिखा हुआ था।

दरवाजा खटखटाने पर एक वृद्ध व्यक्ति बाहर

आए। रवि ने पूछा– ''क्या आपका बटुआ कहीं खो गया है?''

वृद्ध व्यक्ति की आँखें चमक उठीं। उन्होंने कहा– ''हाँ बेटा! मैं बहुत देर से परेशान हूँ। उसमें मेरी दवाइयों का पर्चा भी था और दवाइयों के लिए पैसे भी रखे थे।''

रवि ने मुस्कुराते हुए बटुआ उन्हें सौंप दिया। बटुआ खोलकर देखने पर सारे पैसे सुरक्षित थे। वृद्ध व्यक्ति बहुत खुश हुए। उन्होंने रवि को कुछ पैसे इनाम में देने चाहे, लेकिन रवि ने विनम्रता से मना कर दिया।

रवि बोला– ''दादाजी! यह तो मेरा कर्त्तव्य था। किसी की खोई हुई चीज लौटाना ही सही काम है।''

वृद्ध व्यक्ति ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– ''बेटा! तुम्हारे माता–पिता ने तुम्हें बहुत अच्छे संस्कार दिए हैं। तुम्हारी ईमानदारी ही सबसे बड़ा धन है।''

कुछ दिनों बाद शाला की प्रार्थना सभा में वही वृद्ध व्यक्ति अतिथि के रूप में पधारे, रवि ने उन्हें पहचान लिया और तुरंत उनके पास पहुँचकर उन्हें प्रणाम किया।

फिर उन्होंने अपने वक्तव्य में रवि की ईमानदारी की कहानी सुनाई। उसके बाद प्रधानाचार्य ने भी रवि की प्रशंसा की और पुरस्कार के साथ उसे 'ईमानदार छात्र' का सम्मान–पत्र भी दिया गया।

रवि बहुत खुश था। उसे समझ आ गया कि ईमानदारी का सबसे बड़ा पुरस्कार लोगों का विश्वास और सम्मान होता है। और ईमानदारी ही मनुष्य का सबसे बड़ा गुण होता है।

– भोपाल (म. प्र.)

पहेलियाँ

पहेलियाँ

तीन अक्षर का नाम छोटा सा,
दिखने में बिल्कुल पतला सा।
जो भी मेरे सामने आता,
सच्चा रूप दिखाता उसका।

प्रतिदिन सुबह आता है,
नवीन खबरें लाता है।
जो कोई नित्य पढ़ता उसको
बुद्धिमान बन जाता है।

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता हूँ रहने के काम।
मध्य कटे तो बन गया मन
प्रथम कटे तो बन गया कान।

तीन अक्षर का मेरा नाम,
खाने के आता हूँ काम।
मध्य कटे तो बनता–चाल,
नाम मेरा बोलो तत्काल।

तीन अक्षर का मेरा नाम,
गर्मी देना मेरा काम।
प्रथम कटे तो धूल कहलाऊँ
अंत कटे तो सूर कहाऊँ।

तीन अक्षर से मैं बनी,
रोज रात को आती काम।
सर्दी में तो बिन मेरे,
हो जाता आराम–हराम।

उत्तर– दर्पण, समाचार पत्र, मकान, चावल, सूरज, रजाई।

पांडवों के पाँचों पुत्रों का वध

– मोहनलाल जोशी

महाभारत युद्ध में द्रोणाचार्यजी मारे गये थे। द्रोणाचार्य का पुत्र अश्वत्थामा बहुत कुपित था। युद्ध समाप्त हो गया था। उस दिन रात में अश्वत्थामा पांडवों के शिविर में चोरी से घुसा। वह पांडवों को मारना चाहता था। उसने एक पर्णकुटी में प्रवेश किया। वहाँ पांडवों के पाँच पुत्र सो रहे थे। अश्वत्थामा ने उन्हें पांडव समझ लिया। उसने सभी को नींद में ही मार दिया। फिर वहाँ से भाग गया।

हलचल होने लगी। अर्जुन और कृष्ण को पांडव–पुत्रों के मरने का पता लगा। उन्होंने अश्वत्थामा का पीछा किया। अश्वत्थामा ने अर्जुन पर ब्रह्मास्त्र चला दिया। तब कृष्ण ने अर्जुन से कहा– ''तुम भी जल्दी ब्रह्मास्त्र चलाओ। अर्जुन ने भी ब्रह्मास्त्र चलाया। महर्षि वेदव्यास ने उन दोनों के ब्रह्मास्त्र अपने हाथ में थाम लिये। पृथ्वी को विनाश से बचा लिया। फिर पांडवों ने अश्वत्थामा को छोड़ दिया। वे अपने शिविर में चले गए।

पांडवों की धृतराष्ट्र से भेंट

धृतराष्ट्र को संजय ने युद्ध का वर्णन सुनाया। युद्ध के बाद युधिष्ठिर हस्तिनापुर आये। वे बड़े पिता धृतराष्ट्र से मिलने गये। विदुरजी और श्रीकृष्ण साथ में थे। धृतराष्ट्र पश्चाताप की आग में जल रहे थे। श्रीकृष्ण ने उन्हें सांत्वना दी। धृतराष्ट्र ने कहा– यह सब मेरे पापों का ही परिणाम है। मैं पुत्र मोह में पड़ गया था। मेरे सारे पुत्र मारे गये। पांडु के पुत्र ही मेरे पुत्र हैं। कृष्ण! पांडु पुत्र कहाँ हैं– मैं गले मिलना चाहता हूँ। धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर और अर्जुन को गले लगाया। उनको भीम पर बहुत क्रोध आ रहा था। भीम ने ही दुर्योधन का वध किया था। वे भीम को नजदीक आने पर मसल देना चाहते थे। श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के भाव समझ गये। श्रीकृष्ण ने भीम को दूर खींच लिया। एक लोहे का पुतला धृतराष्ट्र के आगे कर दिया। धृतराष्ट्र ने उस पुतले को जोर से दबाया। वह चूर चूर हो गया। भीमसेन की रक्षा हुई।

– बाड़मेर (राजस्थान)

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

-देवांशु वत्स

आशा

– राम मूरत 'राही'

संध्या के समय जब भी मैं समुद्र के किनारे टहलने जाता, तब वहाँ एक सात–आठ वर्षीय बालक को अकेला बैठा रेत पर कुछ लिखते या घर बनाते देखता था। एक बार मैंने उत्सुकतावश उससे पूछा– ''बेटा! तुम यहाँ क्या कर रहे हो?''

''खेल रहा हूँ।'' उसने मेरी तरफ एक बार देखा और फिर खेलते हुए उत्तर दिया।

''खेल रहे हो, क्या तुम्हारा कोई मित्र नहीं है?'' मैंने उसके पास बैठते हुए पूछा।

''नहीं है।'' उसने संक्षिप्त–सा उत्तर दिया।

''फिर यहाँ अकेले कैसे खेलते हो?''

''मैं अकेला कहाँ हूँ? मेरे साथ मेरा मित्र समुद्र भी तो है।'' उसने भोलेपन से जवाब दिया।

''समुद्र तुम्हरा मित्र! वो भला कैसे?'' मैंने उत्सुकता से पूछा। ''मैंने समुद्र को अपना मित्र बना लिया है और जब भी खेलने का मन करता है, तब इसके पास चला आता हूँ।'' ''लेकिन तुम समुद्र के साथ खेलते कैसे हो?'' मैंने उत्सुकतावश पूछा।

उसने मेरी ओर होकर उत्तर दिया– ''मैं यहाँ रेत पर कभी अपना नाम, तो कभी इसका नाम लिख देता हूँ, तो कभी घर बना देता हूँ, तब ये लहरों से मिटाकर जीत जाता है। लेकिन मैंने भी हार नहीं मानी है। एक न एक दिन ऐसा भी आएगा जब ये मेरा लिखा और बनाया घर मिटा नहीं पाएगा, तब मेरी जीत होगी।'' इसी आशा के साथ वह फिर रेत का घर बनाने में लग या।

– इन्दौर (म. प्र.)

छः अँगुल मुस्कान

पुलिस अधिकारी सिपाही से– जब तुम्हें पता था कि चोर भागकर कहाँ छिपा है, तो तुमने उसको पकड़ा क्यों नहीं?

सिपाही– क्या करता साहब, चोर जिस घर में छिपा था, उसके दरवाजे पर लिखा था– अंदर आना मना है।

*****

रोगी– मुझे बीमारी है कि खाने के बाद भूख नहीं लगती, सोने के बाद नींद नहीं आती, काम करूँ तो थक जाता हूँ।

चिकित्सक– सारी रात धूप में बैठो, ठीक हो जाओगे।

*****

शिक्षक की पत्नी– जब भी तुम्हें हेमा का फोन आता है तो चाहे सुबह हो या शाम, दिन हो या रात छुट्टी हो या स्कूल तुम तुरन्त तैयार होते हो और घर से निकल जाते हो। सच–सच बताओ ये हेमा कौन है? नहीं तो मैं चली अपनी मायके।

शिक्षक– अरे पगली! ''हेमा का मतलब है 'हेड मास्टर है कोई हेमा नहीं।

*****

पति– देखो मैंने अपना दस लाख रुपये का बीमा करवाया है।

पत्नी– इससे क्या होता है बात तो तब है जब पैसा हाथ में आ जाये।

हिन्दी है माता

– राजा चौरसिया

जन्मों से अभी तक, है जिससे नाता।
प्राणों सी प्यारी, हिन्दी है माता।
सहज, सरल मृदुल–तरल,
मीठी है वाणी।
विद्या का उद्गम है
बोली कल्याणी।
तन, मन, धन अर्पित हैं, गीत हृदय गाता।
प्राणों सी प्यारी यह, हिन्दी है माता।
देशभक्ति, भावना
संस्कार एक स्वर में।
तुलसी, मीरा, कबीर
गाएँ घर–घर में।
देश भारती को, शीश है झुकाता।
प्राणों सी प्यारी यह, हिन्दी है माता।

– उमरियापान (म. प्र.)

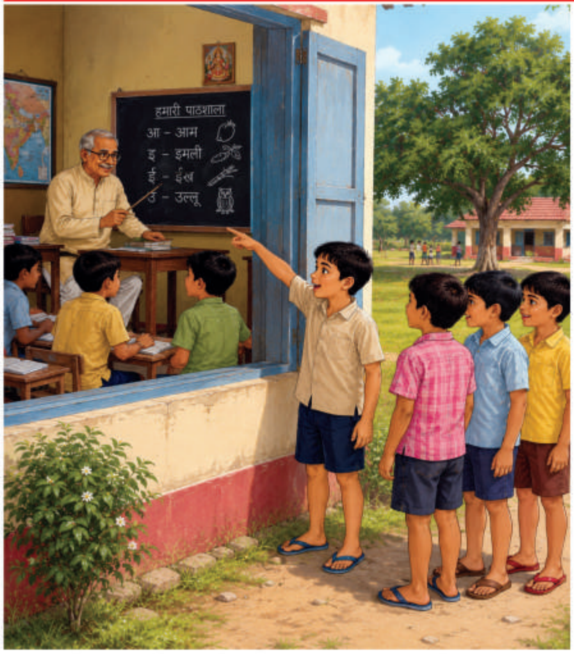

हमारे शिक्षक

– डॉ. कविता विकास

राह से भटके को हैं राह पर लाते शिक्षक।
हमको जीने का सलीका हैं सिखाते शिक्षक।
दोस्त समझो उन्हें अपना या पिता–माता ही
रूप ईश्वर का ही धरकर यहाँ आते शिक्षक।
हम कहाँ जानते थे कोई हुनर है हममें
एक गुमनाम को हैं नाम दिलाते शिक्षक।
शिष्ट आचार, सदाचार, सदाकत, शुचिता
प्यार, समभाव, अहिंसा भी सिखाते शिक्षक।
कोई भी आए मुसीबत हमें डरना नहीं है
जोश भरकर दिलों में चलना बताते शिक्षक।
हमको मंजिल पे पहुँचने के दिखाते रास्ते
आदमी को सदा इंसान बनाते शिक्षक।
हमको बढ़ना वो सिखाते तो कभी रुकना भी
मार्गदर्शक ही हमारे हैं कहाते शिक्षक।

– नोएडा (उ. प्र.)

पुस्तक परिचय

समकालीन बाल साहित्यकारों में **श्रीमती आशा पाण्डेय ओझा** एक प्रतिष्ठित, सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। आपकी रचनाएँ नवाचार एवं संस्कारों का समन्वय होती हैं। यहाँ प्रस्तुत हैं आपके दो बालगीत संग्रहों का परिचय जिनमें विषयों का नयापन, मौलिक प्रस्तुति, कल्पना व यथार्थ का सुंदर रेखाचित्र युक्त संगम है।

चिड़िया आती आँगन में
मूल्य– २००/–

इस संग्रह में ३१ रोचक बाल गीत हैं।

प्रकाशक– अद्विक पब्लिकेशन, ४१, हसनपुर, आई. पी. एक्स. पटपड़गंज, दिल्ली–११००९२

तितली चली सिनेमा हॉल
मूल्य– १७०/–

इस संग्रह में ३१ रोचक बाल गीत है।

प्रकाशक– वनिका पब्लिकेशन, एन ए १६८, गली नं. ६, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली–११००१८

खुशी के उजाले
मूल्य– १२०/–

प्रख्यात बाल साहित्यकार **सौ. पद्मा चौगाँवकर** की ग्यारह बालमन भावन एवं सुंदर रेखाचित्रों से सज्जित बाल कहानियाँ।

प्रकाशक– वेरा प्रकाशन मेन डिग्गी रोड, मदरामपुरा, सांगानेर–३०२०२९ (राजस्थान)

जीत गए है बच्चे
मूल्य– १५०/–

वरिष्ठ बाल साहित्य सर्जक **श्री. विष्णु शर्मा 'हरिहर'** की कलम से जन्मी ४१ विविध विषयी बाल कविताएँ आपको अवश्य पसंद आएँगी।

प्रकाशक– काव्यांजलि प्रकाशन ई–३३५, पार्श्वनाथ अपार्टमेंट नान्ता कोटा–३२४००८ (राजस्थान)।

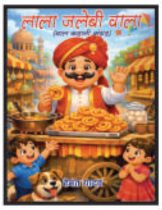

लाला जलेबी वाला
मूल्य– २००/–

वरिष्ठ एवं सुप्रसिद्ध बाल रचनाकार ब **श्री. हेमंत यादव** की यह दस संपूर्ण बहुरंगी पृष्ठों पर सुसज्जा से प्रस्तुत अत्यंत रोचक बाल कहानियों का संग्रह।

प्रकाशन– साहित्यांजलि प्रकाशन गंधियांव करछना, प्रयागराज–२१२३०१ (उ. प्र.)

मुट्ठी में दुनिया
मूल्य– १००/–

सुख्यात बाल साहित्यका साधिका **डॉ. अर्चना प्रकाश** की इस पुस्तक में आप बच्चों के लिए सृजित २० सुरुचिपूर्ण बाल कविताएँ।

प्रकाशन–शतरंग प्रकाशन एस–४३, विकास दीप बिल्डिंग द्वितीयतल स्टेनश रोड, लखनऊ–२२६००१ (उ. प्र.)

यकीन आए ना आए... –संकेत

किसी को बताया जाए की टेलीविजन देखते वक्त दिमाग बहुत सक्रिय होता है तो वो शायद इसे सच मान ले पर सच तो ये है कि सोते वक्त दिमाग टेलीविजन देखते वक्त से भी कहीं ज्यादा सक्रिय होता है.

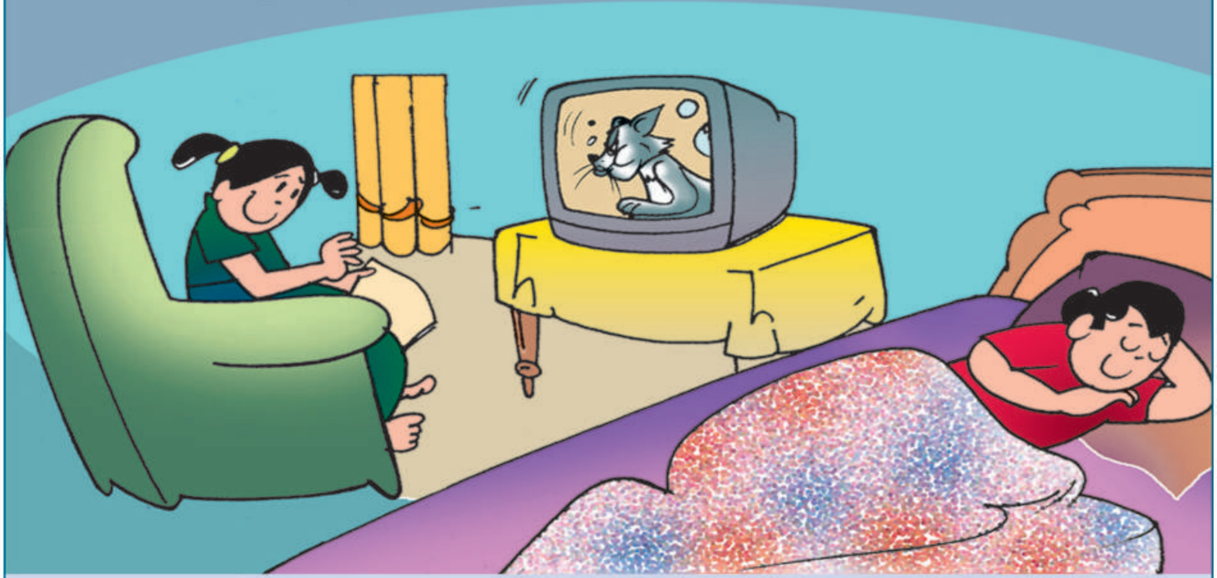

फास्ट फूड रेस्टोरेंट्स में पीले, केसरिया और लाल रंग का प्रयोग अधिक होता है क्योंकि ये रंग इंसान की भूख को उकसाते हैं.

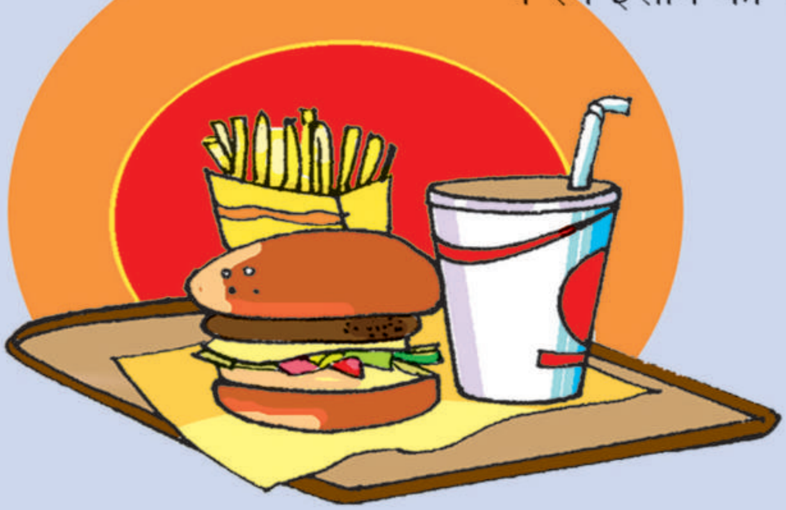

बैल और गधा

– तपेश भौमिक

गज्जू और बज्जू, दो मित्र थे। वे अपने–आप को एक–दूसरे से अधिक होशियार समझते थे। दोनों मित्रों ने यह तय किया कि उन्हें और अधिक विद्या प्राप्त करनी चाहिए। केवल किताबी–ज्ञान से सम्पूर्ण ज्ञान नहीं मिल सकता। अब इसके लिए उन्हें एक ऐसे गुरुजी की तलाश थी जो उन्हें सच्चा ज्ञान दे सके, किन्तु साथ ही वे अपने–अपने मन में यह भी सोचने लगे कि मैं तो होशियार हूँ, विद्या सीखना तो मेरे लिए बाँए हाथ का खेल है पर साथी मित्र के लिए तो लोहे के चने चबाना और विद्या सीखना बराबर है।

उन दोनों ने बहुत सोच–विचार के बाद एक ऐसे गुरुजी को ढूँढ़ निकाला जो जीवन में सफल होने की शिक्षा देने के लिए प्रसिद्ध थे। लोग बहुत सोच–विचार के बाद ही उनके पास जाते थे क्योंकि वे पहले इस बात की जाँच कर लेते थे कि शिक्षार्थी उनकी शिक्षा ग्रहण करने लायक है भी या नहीं।

दोनों गुरुजी के पास पहुँचे और दंडवत प्रणाम

करके हाथ जोड़कर खड़े हो गए। गुरुजी के कहने पर दोनों उनके चरणों के दो तरफ बैठ गए। अब गुरुजी ने उनके आने का कारण पूछा तो दोनों एक ही साथ कुछ कहने लगे। इस पर गुरुजी ने किसी एक को ही कहने के लिए कहा। इस पर दोनों ही 'मैं बोलूँगा, मैं बोलूँगा' कहकर आपस में लड़ गए। इस घटना के कारण गुरुजी को यह समझते देर न लगी कि वे कैसे हैं? गुरुजी ने उन्हें यह बताया कि कोई भी विद्या सीखने से पहले नैतिक–शिक्षा की आवश्यकता होती है।

गुरुजी ने उन्हें बताया कि शिक्षा आरंभ करने से पहले नई कलम और नई कॉपी की आवश्यकता होगी। दोनों ने तत्काल नई कॉपी–कलम की आवश्यकता पर प्रश्न खड़े कर दिए। गुरुजी ने उन्हें समझते हुए कहा कि शिक्षा आरंभ करने से पहले एक छोटी–सी परीक्षा ली जाती है तथा सफल होने पर विद्यारंभ संस्कार होते हैं। इस पर दोनों ने उनकी बात मान ली।

अब गुरुजी ने पहले गज्जू को दो कलम खरीद कर लाने को कहा। साथ ही यह शर्त लगा दी कि वह अपनी इच्छानुसार एक अपने लिए और एक अपने मित्र के लिए खरीदे एवं दोनों को दो अलग–अलग लिफाफों में रख कर उनके मुँह बंद कर दें। साथ ही एक आदेश यह भी दिया। कि अपने कलम वाले लिफाफे पर अपना नाम एवं मित्र के कलम वाले लिफाफे पर मित्र का नाम लिख दें।

गज्जू के चले जाने पर गुरुजी ने बज्जू से प्रश्न किया– ''अच्छा मैं तो बातों–बातों में तुम दोनों से नाम पूछना ही भूल गया था।''

''जी हाँ गुरुजी! मेरा नाम श्रीमान बृजेन्द्र कुमार है, और मेरे मित्र का नाम गज्जू है।'' बज्जू ने चहकते हुए कहा।

''अच्छा श्रीमान बृजेन्द्र कुमार जी! ये जो

आपका मित्र है न, वह कैसा है?'' गुरुजी ने थोड़ी-सी मुस्कुराहट के साथ पूछा।

''एकदम गधा है गुरुजी!'' यह कहकर वह हँसने लगा। गुरुजी ने कुछ भी न कहा। इतने में गज्जू गुरुजी के कहे अनुसार दो लिफाफों में दो कलम लेकर आ गया। उनमें नाम भी लिखे थे। गुरुजी ने दोनों लिफाफों को अपने पास रख लिया। अब उन्होंने बज्जू को भी ऐसा ही करने को कहा तब गज्जू से भी वही प्रश्न किए। इस पर गज्जू ने अपना नाम श्रीमान गजेन्द्र कुमार एवं अपने मित्र का नाम बज्जू बताया।

''अच्छा श्रीमान गजेन्द्र कुमार जी, ये जो आपका मित्र है न, वह कैसा है?'' गुरुजी ने इस बार भी थोड़ी-सी मुस्कुराहट के साथ पूछा।

''एकदम बैल है, गुरुजी!'' यह कहकर वह भी हँसने लगा। गुरुजी ने कुछ भी न कहा।

इतने में बज्जू ने भी दो लिफाफों में दो कॉपियाँ रखकर उनके मुँह बंद कर दिए। साथ ही गुरुजी के कहे अनुसार उन कॉपियों वाले लिफाफों पर नाम भी लिख दिए। बज्जू ने लौटकर गुरुजी को कॉपियों वाले लिफाफों को दे दिया। अब गुरुजी ने दोनों को अंदर के कमरे में अल्पाहार के लिए बुलाया। पास ही विद्या की देवी की एक छोटी-सी प्रतिमा रखी थी। उन्होंने कॉपी-कलम के लिफाफों को देवी के चरणों पर रख दिया। अल्पाहार हेतु तीन थालियाँ रखी थीं, एक में फल रखे थे, जिसे गुरुजी ने अपने लिए रख लिया। दूसरी थाली में घास और तीसरी में भूसा रखे थे। गुरुजी ने घास वाली थाली गज्जू को दी एवं भूसा वाली बज्जू को। फिर स्वयं फल उठाकर खाने लगे। गुरुजी ने एकबार फिर दोनों को जब अल्पाहार करने को कहा तो वे गुस्से के मारे उबल पड़े। उन्होंने कहा कि ऐसे गुरु से उन्हें शिक्षा नहीं लेनी है, जो अपने शिष्यों का इस प्रकार अपमान करे। इस पर गुरुजी ने गंभीरतापूर्वक कहा कि इसमें उनका कोई दोष नहीं है। तुम दोनों ने एक-दूसरे के बारे में जैसा बताया है, ठीक उसी प्रकार का नाश्ता मैंने परोसा है, बैल के लिए भूसा और गधे के लिए घास! यहाँ कौन-सी गलती हो गई है?'' गुरुजी ने साफ-साफ शब्दों में प्रश्न किया।

इतना सुनना था कि दोनों का चेहरा पीला पड़ गया। अब गुरुजी ने विषय को आगे बढ़ाते हुए उन्हें विद्या देवी के चरणों से कॉपी-कलम के लिफाफों को अपने-अपने नाम के अनुसार लेने को कहा। दोनों ने काँपते हाथों से उन्हें ले लिया। अब गुरुजी ने उन्हें उन लिफाफों को खोल कर कॉपी-कलम लेकर परीक्षा के लिए तैयार होने को कहा।

अब गज्जू के हाथ अच्छी कलम और सस्ती कॉपी थी जब कि बज्जू के हाथ सस्ती कलम और अच्छी कॉपी थी। दोनों शर्म से गड़े जा रहे थे। उन्होंने सर झुका लिया। अब गुरुजी ने गंभीरतापूर्वक दोनों से कहा- ''मैंने तुम्हारी तीन परीक्षाएँ ली हैं। तीनों परीक्षाओं में तुम दोनों पूरी तरह असफल रहे।''

एक- ''तुम दोनों से एक-दूसरे के मित्र के नाम पूछे गए तो दोनों ने अपने-अपने नाम श्रीमान लगाकर 'गज्जू' की जगह 'गजेन्द्र' और 'बज्जू' की जगह 'ब्रजेन्द्र' बताया, जबकि मित्र नाम पर 'श्रीमान' तो दूर की बात! 'गज्जू' और 'बज्जू' बताया।''

क्रमांक दो- बज्जू! तुमने गज्जू को गधा बताया और गज्जू! तुमने बज्जू को बैल बताया।

तीन- ''जिसे मैंने कलम लाने को कहा उसने अपने लिए अच्छी कलम ली जबकि मित्र के लिए सस्ती कलम; फिर जिसे मैंने कॉपी लाने को कहा उसने अपने लिए अच्छी कॉपी और मित्र के लिए सस्ती कॉपी ली।''

अब गुरुजी ने उपदेश देते हुए कहा-''सच्ची शिक्षा प्राप्त करने हेतु पहले उत्तम मानव बनना आवश्यक है। विद्वान तो शैतान भी बन जाते हैं।''

- कूचबिहार (पश्चिम बंगाल)

इस तरह बनाओ

शुतुरमुर्ग

आओ बच्चों गाएँ हम

– लारा उपाध्याय

आओ बच्चों गाएँ हम, मिलकर गीत सुनाएँ हम।
हँसते–हँसते गाते–गाते, खुशियाँ खूब मनाएँ हम।।
चिड़ियाँ बोली चीं–चीं–चीं, कोयल बोली कूँ–कूँ–कूँ।
हम भी मिलकर गाएँ गीत, तुम भी गाओ यूँ–यूँ–यूँ।।
सूरज दादा आएँ हैं, नई रौशनी लाएँ हैं।
प्यारे बच्चो! उठो उठो, नया सवेरा लाएँ हैं।।

– पाली (राजस्थान)

खोजो तो जानें

– चाँद मोहम्मद घोसी

बिना साग सब्जी के भोजन गले से नीचे नहीं उतरता। साग व सब्जियों को विभिन्न प्रकार के खाद्य तेल द्वारा पकाया जाता है। प्रिय बच्चो! नीचे की पँक्तियों में नौ खाद्य तेलों के नाम खोजो तो जानें।

१) चौमूं गफलीतियों का नगर नहीं है वहाँ सभी साक्षर हैं।

२) हक और बातिल की लड़ाई शुरू से है और प्रलय तक रहेगी लेकिन जीत हक की ही होगी।

३) अपने कोल्ड स्टोर में पारस रसों को दूध में मिलाकर खट्टा–मीठा स्वादिष्ट शरबत बनाता है।

४) कालबेलिया बोला, कोबरा सांप कहाँ पर सोया बीन बजाकर उसे टोकरी में बंद कर दूँगा।

५) नव विवाहिता रूबि नौ लाख रुपये का हीरे–मोतियों का हार अपने पति देव से मँगवाकर पहनेगी।

६) बैंक डकेती करके डाकू सरदार ने कहा– ''चुपचाप भागो लालसिंह चौकीदार कहीं जाग न जाये।

७) प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने पर इमरान के पापा महँगी से महँगी भेंट लाकर उसे देंगे।

८) गाल पर बना नासूर जमुखीया की जान का दुश्मन बन गया।

९) इकतारा मीराबाई का अत्यंत प्रिय वाद्य यंत्र था।

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

उत्तर– १) मूँगफली। २) तिल। ३) सरसों। ४) सोयाबीन। ५) बिनौला। ६) गोला। ७) पाम। ८) सूरजमुखी। ९) तारामीरा।

कमाल की तरकीब!

चित्रकथाः देवांशु वत्स

समय का महत्व

– शिवप्रताप सिंह ठाकुर

समय जीवन है। समय के महत्व को संसार में सभी ने स्वीकारा है। डॉ. विश्वेश्वरैया ने इस सत्य को अपने जीवन में चरितार्थ करके दिखाया। उनका सम्पूर्ण जीवन ही काम करते–करते हुए बीता। बड़े कर्मठ व्यक्ति थे वे।

एक बार जब उनसे पूछा गया कि महाशय, आपके दीर्घ जीवन का रहस्य क्या है? डॉ. विश्वेश्वरैया ने शांत भाव से उत्तर दिया ''सब काम सदा समय से करना। मैं अपने छोटे–बड़े काम समय पर करता हूँ। समय पर खाना खाता हूँ। समय पर सोता हूँ और समय पर ही नियमित सैर तथा व्यायाम करता हूँ।'' आज सारे देश में सड़कों, नहरों, बाँधों और अनेक गगनचुंबी विशाल भवनों के रूप में उनके कार्यों के अगणित स्मारक विद्यमान हैं सब उन्हीं के कर्मठ जीवन और कर्त्तव्य की अनोखी गाथा कह रहे हैं। उन्होंने सदैव बिना विश्राम किए। अथक परिश्रम करते हुए अपना संपूर्ण जीवन बिताया।

समय अनमोल है। समयानुसार कार्य करना ही समय का सदुपयोग है। समय का सदुपयोग ही मानव जीवन की सफलता का सूत्र है।

– पचौर (म. प्र.)

भूल–भुलैया
प से परी और पतंग

– चाँद मोहम्मद घोसी

आसमान में परी और पतंग दोनों दूर–दूर उड़ रहे हैं। परी पतंग को पकड़ना चाहती है लेकिन बादलों की भूल–भुलैया में पतंग उसे दिखाई नहीं दे रहा है। प्रिय बच्चो, अब परी को पतंग तक पहुँचाओ।

– मेड़ता सिटी (राजस्थान)

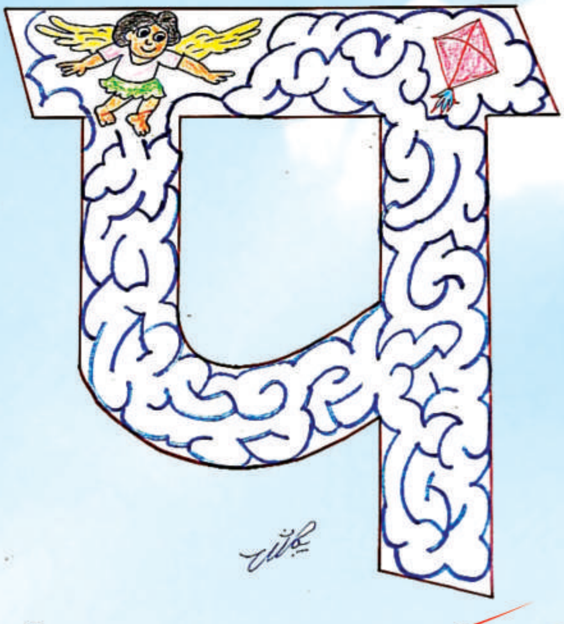

श्रीगणेश पहेलियाँ

(०१) सूप के जैसे कान हैं सुनते सबकी टेर।
इससे नाम गणेश का क्या है कहो, न देर।।

(०२) बड़ा पेट इनका बहुत मोदक कई समाय।
नाम गणेश का कौनसा दो सबको बतलाय।।

(०३) टेढ़ी इनकी सूंड है पेट तलक लहराय।
नाम गणेश का कौनसा इसीलिए कहलाय।।

(०४) हर हाथी के मुख दिखें लंबे से दो दाँत।
एक है दाँत गणेश का नाम कौन विख्यात।।

(०५) लिए पात्र हैं हाथ में खाते रहें सदैव।
नाम गणेश का कौनसा मोदक वाले देव।

(०६) चूहे पर चढ़ पहुँचते जहाँ करे प्रस्थान।
नाम गणेश का कौनसा कहते सब विद्वान।।

(०७) हाथी का मुख है लगा देव देह बलवान।
मुख के कारण नाम क्या कर गणेशका ध्यान।।

(०८) सभी गणों के अधिपति गण के नाथ महान।
उन गणेश का नाम क्या सोचो देकर ध्यान।।

(०९) शिव समान ही पुत्र के सिर पर सोहे चंद।
नाम गणेश का वह कहो अगर नहीं मतिमंद।।

(१०) सब विघ्नों के एक ही हैं गणेश अधिराज।
विघ्न हरें सब भक्त के नाम कहो शुभ आज।।

(११) जिनका आराधन किए सब विधि मंगल होय।
नाम मांगलिक कौनसा कहो गणेश का कोय।।

(१२) पहली पूजा सब करें करके सब शुभ होय।
क्या पदवी श्री गणेश की जिस जयजय होय।।

उत्तर क्रमशः– शूर्पकर्ण, लम्बोदर, वक्रतुण्ड एकदंत, मोदकप्रिय, मूषकवाहन, गजमुख/गजवदन, गणपति, भालचन्द्र, विघ्नहर्ता, मंगलमूर्ति, प्रथमपूज्य।

केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२६

वरिष्ठ समाज सेवी श्री. रमेश गुप्ता द्वारा स्थापित केशर पूरन स्मृति पुरस्कार हेतु अलग से कोई प्रविष्टि आमंत्रित नहीं की जाती बल्कि जनवरी २०२६ से दिसम्बर २०२६ के मध्य 'देवपुत्र' के 'पुस्तक परिचय' स्तंभ में परिचयार्थ प्रकाशित कृतियों में से किसी एक का चयन कर यह पुरस्कार दिया जाता है।

पुरस्कार न चाहने वाले लेखक अपनी कृतियाँ भेजते समय एक संक्षिप्त सूचना 'पुरस्कार के लिए नहीं केवल परिचय प्रकाशन हेतु' लिखित रूप में दे सकें तो उन कृतियों को प्रतियोगिता परिधि से बाहर रखा जा सकेगा। आपकी प्रकाशित कृतियाँ 'भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान' की अमूल्य धरोहर बनती है इसलिए प्रकाशित कृतियाँ प्रेषित अवश्य करें।

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

'देवपुत्र' द्वारा आयोजित निम्नांकित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए आपकी प्रविष्टियाँ ३१ दिसम्बर २०२६ तक सादर आमंत्रित हैं।

सभी प्रतियोगिताओं के लिए सामान्य नियम– १) एक प्रतियोगिता हेतु एक ही प्रविष्टि भेजें। २) प्रविष्टि पर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम अपना पूरा नाम, पता, पिनकोड एवं व्हाट्सएप नम्बर अवश्य लिखें। ३) प्रविष्टि हेतु रचनाएँ सुवाच्य अक्षरों में हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टाइप की हों। ४) प्रविष्टि संपादक देवपुत्र–४०, संवाद नगर, इन्दौर–४५२००१ (म. प्र.) पर डाक द्वारा अथवा editordevputra@gmail.com पर मेल करें। ५) निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। ६) पुस्तकों के अतिरिक्त प्रतियोगिता में प्राप्त सभी रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' के पास सुरक्षित होगा। ७) कृपया रचनाओं के स्वरचित होने का प्रमाणपत्र अवश्य भेजें।

श्री. भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२६

'देवपुत्र' के पूर्व व्यवस्थापक श्री. शांताराम शंकर भवालकर जी की पावन स्मृति में आयोजित यह स्वरचित बाल कहानी प्रतियोगिता केवल कक्षा ४ से १२ तक अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के लिए ही है। बच्चे अपने किसी भी मनपसंद विषय पर स्वयं की लिखी हुई कोई बाल कहानी इस प्रतियोगिता में भेज सकते हैं।

पुरस्कार होंगे– प्रथम १५००/– द्वितीय ११००/– तृतीय १०००/–
प्रोत्साहन (२) ५००/– ५००/–

मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२६

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार स्व. डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से प्रायोजित यह पुरस्कार जनवरी २०२६ से दिसम्बर २०२६ के मध्य प्रकाशित हिन्दी बाल साहित्य की 'बाल कविता' विधा के लिए निश्चित किया गया है। प्रविष्टि स्वरूप उक्त अवधि में प्रकाशित बाल कविता की प्रकाशित पुस्तक ३ प्रतियों में भेजना आवश्यक है।

सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर पुरस्कार निधि ५०००/– होगी।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२६

वरेण्य बाल साहित्य सर्जक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष विषय 'विद्यार्थियों में नागरिक कर्त्तव्य बोध' (**Civic Sense**) निश्चित किया गया है। आप इस विषय पर अपनी बाल कहानी प्रविष्टि स्वरूप अवश्य भेजिए।

पुरस्कार होंगे– प्रथम १५००/– द्वितीय १२००/– तृतीय १०००/–
प्रोत्साहन (२) ५००/– ५००/–

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०८/२०२६ | प्रेषण तिथि ३०/०८/२०२६ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/-   वार्षिक सदस्यता ३००/-   १० वर्षीय सदस्यता ५०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित   सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी